إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر

बेशक नमाज़ बेहयाई और
बुरे कामों से रोकती है।

सच्ची नमाज़

साथ

नीयतनामा

दुआए गंजुल अ़र्श

₹ 30/-

PUBLISHED BY
Mushahid Book Depot
مشاہد بکڈپو
29A, ZAKARIA STREET 1st Floor,
KOLKATA-73 Phone: 033 2234 3406

Galaxy S23 Ultra

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस्लामी कलिमे

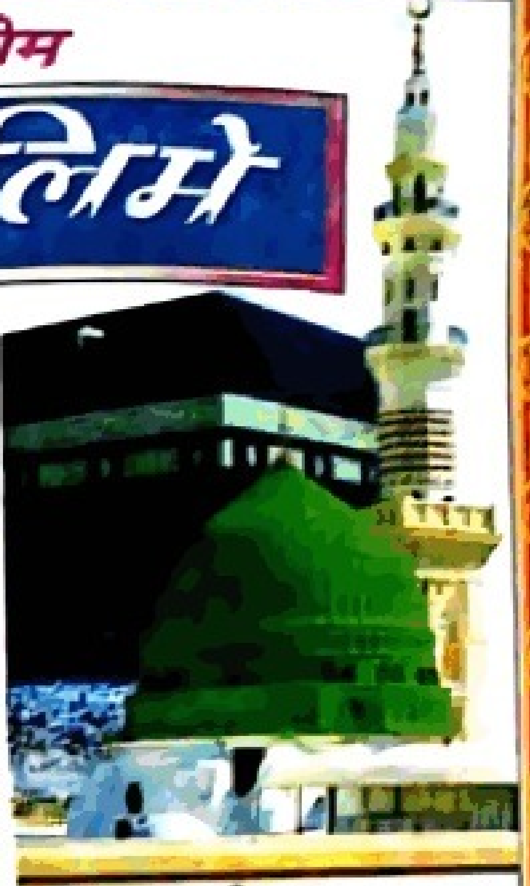

(१) कलिमए तय्यिब-

लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

(२) कलिमए शहादत-

अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरी क लहु व अश्हदु अन् न मुहम्मदन् अब्दु हू व रसूलु हू

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

(३) कलिमए तम्जीद-

सुब्हा नल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर व ला हौ ल व ला कुव्व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लीइल अ़ज़ीम

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

(४) कलिमए तौहीद-

ला इला ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहु लहुल मुल्कु व लहु ल्हम्दु युह्यी व युमीतु व हु व हय्युल् ला यमूतु अब दन अबदा ज़ुल्जलालि वल्इक्रामि बि यदि हिल्खैरु व हु व अला कुल्ले शैईन् क़दीर

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ
حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(५) कलिमए इस्तग़फ़ार –

अस्तग़् फ़िरूल्ला ह रब्बी मिन् कुल्लि जम्बिन् अज़् नब्तुहु अमदन् औ खता अन् सिर्रन् औ अलानि य तँव व अतूबु इलैहि मिनज़्ज़म्बिल् लज़ी आअ् लमु व मिनज़् ज़म्बिल्लज़ी ला आअ्लमु इन्न क अन् त अल्लामुल ग़ोयूबि व सत्तारूल् ओयूबि व ग़फ्फ़ारूज़् जुनूबि व ला हौ ल व ला कूव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिई ल अज़ीम।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْۢبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً
وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْۢبِ الَّذِيْٓ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْۢبِ الَّذِيْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ
عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

(६) कलिमए रद्दे कुफ्र-

अल्ला हुम् म इन्नी अऊजु बि क मिन अन् उश रि क बि क शैअवँ व अना आअलमु बिही व अस्तग़् फिरू क लिमा ला अअलमु बिही तुब्तु अन्हु व तबर्राअतु मिनल् कुफ़रि वश्शिर्कि वल् किज़्बि वल् ग़ीबति वल् बिदअ़ति वन्नमीमति वल्फवाहिशि वल्बुहतानि वल् मआ़सी कुल्लिहा व अस्लम्तु व आ मनतु व अकूलु ला इला ह इल्लाल्लाहु मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ
لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ
وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِيْ كُلِّهَا اَسْلَمْتُ وَاٰمَنْتُ وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ईमाने मुजमल-

आमन्तु बिल्लाहि कमा हु व बि असमाएही व सिफ़ातिही व क़बिल्तु जमी अ़ अहकामिही

آمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَائِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ

ईमाने मुफस्सल-

आमन्तु बिल्लाहि व मला इ क तिही व कु तु बिही व रुसुलेही वल योमिल आखिरे वल क़दरि ख़ैरेही व शर्रेहि मिनल्लाहि तआ़ला वल बाअसि बाअ़द़ल मौति

آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ
مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ،

नमाज़ों की नीयत (अ़र्बी और हिन्दी में)

नमाज़े फ़ज्र की दो रकअ़त सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْفَجْرِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ फ़ज्र की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

फ़ज्र की दो रकअ़त फर्ज़-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْفَجْرِ فَرْضَ اللّٰهِ
تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ फ़ज्र की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुहर की चार रकअत सुन्नत

نویت ان اصلی للہ تعالیٰ اربع رکعات صلوۃ الظہر سنت
رسول اللہ متوجہا الی جہۃ الکعبۃ الشریفۃ اللہ اکبر

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ जुहर की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुहर की चार रकअत फ़र्ज

نویت ان اصلی للہ تعالیٰ اربع رکعات صلوۃ الظہر فرض
اللہ تعالیٰ متوجہا الی جہۃ الکعبۃ الشریفۃ اللہ اکبر

नीयत की मैंने नमाज़ जुहर की चार रकअ़त् फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

बाद जुहर दो रकअत सुन्नत

نویت ان اصلی للہ تعالیٰ رکعتی صلوۃ الظہر سنۃ رسول
اللہ متوجہا الی جہۃ الکعبۃ الشریفۃ اللہ اکبر

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ जुहर की सुन्नत रसूले पाक की फ़र्ज के बाद वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुहर की दो रकअत नफ्ल

نویت ان اصلی للہ تعالیٰ رکعتی صلوۃ النفل متوجہا
الی جہۃ الکعبۃ الشریفۃ اللہ اکبر

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ जुहर की नफ्ल वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

अस्त्र की चार रकअत सुन्नत

नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़े अ़स्र की सुन्नत रसूले पाक

की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعَصْرِ
سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرْ

असर की
चार रकअत फ़र्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعَصْرِ
فَرْضَ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرْ

नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ अ़स्र की फ़र्ज वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

मग़रिब की
तीन रकअत फ़र्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى ثَلٰثَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْمَغْرِبِ فَرْضَ
اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرْ

नीयत की मैंने तीन रकअ़त नमाज़ मग़रिब की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

मग़रिब की
दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْمَغْرِبِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرْ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ मग़रिब की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

इशा की
चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرْ

नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ इशा की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

नमाज़े इशा
की चार रकअ़त फ़र्ज़

نَوَیْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰہِ تَعَالٰی اَرْبَعَ رَکْعَاتِ صَلٰوۃِ الْعِشَاءِ
فَرْضُ اللّٰہِ مُتَوَجِّھًا اِلٰی جِھَۃِ الْکَعْبَۃِ الشَّرِیْفَۃِ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ इशा की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

बाद इशा
दो रकअ़त सुन्नत

نَوَیْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰہِ تَعَالٰی رَکْعَتَیْ صَلٰوۃِ الْعِشَاءِ سُنَّۃَ
رَسُوْلِ اللّٰہِ مُتَوَجِّھًا اِلٰی جِھَۃِ الْکَعْبَۃِ الشَّرِیْفَۃِ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ ईशा की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

वित्र की
तीन रकअ़त वाजिब

نَوَیْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰہِ تَعَالٰی ثَلٰثَ رَکْعَاتِ صَلٰوۃِ الْوِتْرِ وَاجِبًا
لِلّٰہِ مُتَوَجِّھًا اِلٰی جِھَۃِ الْکَعْبَۃِ الشَّرِیْفَۃِ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

नीयत की मैंने तीन रकअ़त नमाज़ वित्र की वाजिब वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

मस्जिद में दाखिल होने की दो रकअ़त सुन्नत-

نَوَیْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰہِ تَعَالٰی رَکْعَتَیْ صَلٰوۃِ دُخُوْلِ الْمَسْجِدِ
سُنَّۃَ رَسُوْلِ اللّٰہِ مُتَوَجِّھًا اِلٰی جِھَۃِ الْکَعْبَۃِ الشَّرِیْفَۃِ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ मस्जिद में दाखिल होने की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा

काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुम्आ से पहले की चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ قَبْلَ الْجُمُعَةِ
سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ जुम्आ की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुम्आ की दो रकअत फर्ज़

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْجُمُعَةِ فَرْضَ اللّٰهِ
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ जुम्आ की फर्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

बाद जुम्आ चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ بَعْدَ الْجُمُعَةِ
سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने बाद जुम्आ चार रकअ़त सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुम्आ की दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ بَعْدَ الْجُمُعَةِ
سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ जुम्आ की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

दो रकअत नमाज़ ईदुल फित्र

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی رَكْعَتَیْ صَلٰوةِ عِیْدِ الْفِطْرِ مَعَ سِتَّةِ تَكْبِیْرَاتٍ زَائِدَةٍ وَاجِبًا لِلّٰهِ تَعَالٰی مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِیْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ ईदुल फित्र की वाजिब जाइद ६ तकबीरों के वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

दो रकअत नमाज़ ईदुल अज़हा

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی رَكْعَتَیْ صَلٰوةِ عِیْدِ الْاَضْحٰی مَعَ سِتَّةِ تَكْبِیْرَاتٍ زَائِدَةٍ وَاجِبًا لِلّٰهِ تَعَالٰی مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِیْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ ईदुल अजहा की वाजिब ज़ाइद ६ तकबीरों के वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

दो रकअत नमाज़े तरावीह

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی رَكْعَتَیْ صَلٰوةِ التَّرَاوِیْحِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِیْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ तरावीह की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

नोट

(१) नमाज़े नफ्ल की नीयत ख्वाह जुहर की हो या मगरिब या इशा की सबकी नीयत एक ही जैसी है।

(२) फर्ज़ों की नीयत में اِقْتَدَیْتُ بِهٰذَا الْاِمَامِ इक त दयतु बिहाज़ल इमाम (पीछे इस इमाम के) भी कहे जबकि जमाअ़त से पढ़ता हो।

फ़ज़ाइले नमाज़

ईमान व अक़ीदा सही कर लेने के बाद मुसलमानों पर सब फ़र्ज़ों से अहम फर्ज़ और तमाम इबादतों में बड़ी इबादत नमाज़ है कुरआने पाक और अहादीसे तय्यिबा में सब से ज्यादा इसी की ताकीद आयी है और इसके छोड़ने पर सख़्त अज़ाब और शदीद वईदें वारिद हुयी हैं। ज़ैल में इस सिलसिले की चन्द हदीसें ज़िक्र की जाती हैं कि मुसलमान अपने आक़ा प्यारे मुस्तफा रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इर्शादात सुनें, अ़मल करें और दुसरों को अ़मल की तरगीब दें अल्लाह तआ़ला अ़मल की तौफीक़े रफीक़ अता फरमाए। आमीन।

(१)रसूलुल्लाह ***सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम् इर्शाद फरमाते हैं कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजों पर है। १. इस अम्र की शहादत देना कि अल्लाह के सिवा कोयी सच्चा माअबूद नहीं और मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं। २. नमाज़ काएम रखना। ३. जकात देना। ४. हज करना। ५. और माहे रमज़ान के रोज़े रखना।*** (बुखारी शरीफ)

(२)हज़रते अ़बदुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्ह कहते हैं कि मैंने हुजूरे आअ़ला सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि ***आमाल में अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक सब से ज़्यादा महबूब किया है? फरमाया! नमाज़ वक्त के अन्दर, मैंने अ़र्ज़ किया फिर किया? फरमाया वाल्दैन के साथ नेक सुलूक- अ़र्ज़ किया! फिर क्या? फरमाया! राहे खुदा में जिहाद।***(बुखारी शरीफ)

(३)रहमतुल्लिल आ़लमीन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम् ने इर्शाद फरमाया! बताओ तो किसी दरवाज़े पर नहर हो और वह उसमें हर रोज़ पाँच बार गुस्ल करे-क्या उसके बदन पर मैल रह जायेगा! सहाबा ने अ़र्ज़ किया! उसके बदन पर कुछ बाकी न रहेगा, फरमाया! यही मिसाल पाँचों नमाज़ों की है कि अल्लाह तआ़ला उन की सब ख़ताओ को मिटा देता है। (बुखारी शरीफ)

(४) नबीए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जाड़े में बाहर तशरीफ़ ले गये पतझड़ का ज़माना था दो टहनियाँ पकड़ लीं पत्ते गिरने लगे फ़रमाया! ऐ अबूज़र? अर्ज किया लब्बैक या रसुलल्लाह! फ़रमाया मुसल्मान बन्दा अल्लाह तआला के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उसके गुनाह ऐसे ही गिरते है जैसे इस दरख़्त से पत्ते। (अबू दाऊद बहवाला मिश्कात सफ़्हा ५८)

वुज़ू करो सही तरीका

नीयत करने और बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़ने के बाद मिस्वाक इस्तेमाल की जाए। फिर गट्टों तक हाथों को पानी से मले और उंगलियों का खिलाल करे फिर बाएँ हाथ में लोटा वगैरह लेकर दाहिने हाथ पर उंगलियों की तरफ से शुरू करके गट्टे तक तीन बार पानी बहाया जाए फिर बाएँ हाथ पर उंगलियों की तरफ़ से शुरू करके गट्टे तक तीन बार पानी बहाए फिर तीन बार कुल्ली करे इस तरह कि मुँह की तमाम जड़ों और दांतो की सब खिड़कियों में पानी पहुंच जाए कि वुज़ू में इस तरह कुल्ली करना सुन्नते मुअक्किदह है और गुस्ल में फ़र्ज है। अगर रोज़हदार न हो तो हर कुल्ली गरगरह के साथ करे फिर नाक में अगर रींठ लगी हो तो बाँए हाथ से साफ करके सांस की मदद से तीन बार नर्म बाँसो तक पानी चढ़ाए ताकि कोयी बाल धुलने से बाक़ी न रहे फिर चेहरा पर अच्छी तरह पानी मल कर इसको तीन बार इस तरह धोए कि एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पेशानी के ऊपर कुछ सर के हिस्से से ठोड़ी के नीचे तक हर हिस्सा पर पानी बह जाए अगर दाढ़ी हो तो इस तरह खिलाल करे कि उँगलियों को गरदन की तरफ से दाखिल करे और सामने निकाले और उसके बाल और खाल पर भी पानी बहाए फिर दोनों हाथों पर पानी मल कर पहले दाहिने हाथ पर फिर बायें हाथ पर सरे नाखुन से शुरू करके निस्फ़ बाज़ू तक तीन मरतबा पानी बहाए फिर सिर का मसह इस तरह करे कि दोनों हाथों के अँगूठे और कलिमे की उँगलियाँ छोड़ कर बाक़ी तीन तीन उँगलियों के सरे मिलाकर पेशानी के बाल उगने की जगह

पर अगर बाल हों वरना इसकी खाल पर रक्खे और सर के उपरी हिस्से पर गद्दी तक इस तरह ले जाए कि हथेलियाँ सर से जुदा रहें फिर वहां से हथेलियों से सर के दोनों करवटों का मसह करते हुये पेशानी तक वापस लाए उसके बाद कलिमे की उगलियों के पेट से कान के अन्दरूनी हिस्सा का मसह करे और अंगूठे के पेटसे कान के वाहरी सतह का मसह करे और उन्ही उंगलियों की पुश्त से सिर्फ गरदन का मसह करे फिर पानी से दोनों पांव मले और बाँए हाथ की छंगुलिया से इस तरह खिलाल करे कि दाहिने पाँव की छंगुलिया से शुरू करके अंगूठे पर खतम करे और बाँए पांव में अंगूठे से शुरु करके छंगुलिया पर खतम करे और दोनों पांव पर उंगलियों की तरफ से निस्फ पिण्डली तक हर बाल और हर हिस्सए खाल पर तीन तीन वार पानी बहाए।(मुकम्मल निज़ामे शरीअ़त)

वुज़ू के फ़राइज़

वुज़ू में ४ फर्ज़ हैं:-(१) मुँह धोना पेशानी के बालों से ठुड्डी के नीचे तक और एक कान की लौ से दुसरे कान की लौ तक;(२)दोनों हाथों को कुहनियों समेत धोना;(३)चौथाई सर का मसह करना;(४)दोनों पांव टख्नों समेत धोना।(रद्दुल मुहतार १ सफ्हा ९७)

वुज़ू की सुन्नतें

(१) नीयत करना;(२) बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़ना; (३) पहले दोनों हाथ गट्टों तक धोना;(४) मिस्वाक करना;(५) तीन वार कुल्ली करना इस तरह कि पानी तमाम मुँह के अन्दर हलक़ की जड़ तक पहुँच जाए; (६) तीन मरतबा नाक की तमाम नर्म जगहों में पानी पहुंचाना;(७) मुँह धोते वक्त दाढ़ी का खिलाल करना;(८) हाथ पाँव की उगलियों का खिलाल करना;(९) हर अ़ज्व को तीन तीन बार धोना;(१०) एक बार पूरे सर का मसह करना;(११) दोनों कानों का मसह करना;(१२) तरतीब से वज़ू करना;(१३) अज़ा को पय दर पय (लगातार) धोना;(१४) दाढ़ी के जो बाल मुँह के दायरे से नीचे हैं उनका मसह करना; (आलमगीरी व वहारे शरीअ़त)

वुज़ू के मुस्तहब्बात

(१) जो आअज़ा चौड़े हैं मसलन दोनों हाथ दोनों पांव तो इन में दाहिने से धोने की इब्तदा (पहल) करें मगर दोनों रुख्सार कि इन दोनों को एक ही साथ धोना चाहिये यूँही दोनों कानों का मसह एक साथ होना चाहिये;(२) उँगलियों की पीठ से गरदन का मसह करना;(३) ऊँची जगह बैठकर वुज़ू करना;(४) वुज़ू का पानी पाक जगह गिराना;(५) अपने हाथ से वुज़ू का पानी भरना;(६) दूसरे वक्त के लिये पानी भर कर रख देना;(७) ढीली अंगूठी को भी फिरा लेना;(८) साहिबे उज़्र न हो तो वक्त से पहले वुज़ू कर लेना;(९) इतमिनान से वुज़ू करना;(१०) कानों के मसह के वक्त उँगलियां कानों के सुराखों में दाखिल करना;(११) कपड़ों को टपकते हुये क़तरात से बचाना; (१२) वुज़ू का बरतन मिट्टी का होना;(१३) अगर तांबे वगैरह का हो तो क़लयी किया हुआ हो;(१४) अगर वुज़ू का बरतन लोटा हो तो बाँए तरफ रखना;(१५) हर अज़्व को धोकर उसपर हाथ फेरना ताकि क़तरे बदन पर या कपड़े पर न टपकें;(१६) हर अज़्व को धोते वक्त दिल में वुज़ू की नीयत का हाजिर रहना;(१७) हर अज़्व को धोते वक्त अलग अलग अज़्व के धोने की दुआओं को पढ़ते रहना;(१८) आज़ाए वुज़ू को बिला जुरुरत पोंछ कर खुश्क न करे और अगर पोछे तो कुछ नमी बाकी रहने दे;(१९) वुज़ू करके हाथ न झटके कि यह शैतान का पंखा है;(२०) वुज़ू के बाद अगर मकरूह वक्त न हो तो दो रकअ़त नमाज़ पढ़ ले इसको तहियतुल्वुज़ू कहते हैं।

वुज़ू के मकरूहात

(१) वुज़ू के लिए नापाक जगह बैठना या नापाक जगह वुज़ू का पानी गिराना;(२) आज़ाए वुज़ू से लोटे वगैरह में पानी टपकाना; (३) मस्जिद के अन्दर वुज़ू करना;(४) पानी में थूकना, नाक सिनिक्ना अगर चि दरिया या हौज़ हो;(५) किब्ला की तरफ थूकना या कुल्ली करना;(६) बे जुरुरत दुनिया की बातें करना;(७) जुरुरत से ज़्यादा पानी ख़र्च करना;(८) इतना कम पानी ख़र्च करना कि सुन्नत अदा न

हो;(९) चेहरा पर ज़ोर से पानी मारना;(१०) एक हाथ से मुँह धोना कि यह हिन्दुओ (काफ़िरो) का तरीक़ा है;(११) गले का मसह करना। (१२) बाएं हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी डालना;(१३) दाएं हाथ से नाक साफ करना;(१४) धूप के गर्म पानी से वुज़ू करना कि वह बर्स (सफेद दाग़) पैदा करता है;(१५) होंट या आँख ज़ोर से बन्द कर लेना;(१६) किसी सुन्नत को छोड़ देना। (बहारे शरीअत)

वुज़ू को तोड़नेवाली चीजें

पाख़ाना, पेशाब, वदी, मज़ी, मनी, कीड़ा, पथरी, जो मर्द या औरत के आगे या पीछे के मक़ाम से निकले। मर्द या औरत के पीछे के मक़ाम से हवा का निकलना; ख़ून या पीप या पीले पानी का बदन के किसी भी हिस्सा से निकलना और बहना, खाने या पानी या सुफ़रा की मुँह भर क़य आना; इस तरह सो जाना कि दोनों सुरीन अपनी जगह अच्छी तरह न जमें हों; चित या पट या करवट पर लेट कर सो जाना; बेहोशी, जुनून, ग़शी और इतना नशा कि चलने में पाँव लड़खड़ाए इससे भी वुज़ू टूट जाता है; बालिग़ शख्स का रुकूअ व सुजूद वाली नमाज़ में इतनी आवाज से हँसना कि आसपास वाले सुन लें; दाँतों से इस क़द्र ख़ून निकलना कि इससे थूक का रंग सुर्ख (लाल) हो गया; दुखती हुयी आँख से पानी बहना क्यूंकि वह पानी (आँसू) नापाक है, इस तरह कान, नाक, पिस्तान वग़ैरह में दाना या नासूर या कोवी मर्ज़ हो उनकी वजह से जो पानी बहे इससे भी वुज़ू जाता रहता है;

मसअलह: औरत के आगे के मक़ाम से जो ख़ालिस रतूबत बिग़ैर ख़ून वाली निकलती है इससे वुज़ू नहीं टूटता अगर यह रतूबत कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है;

मसअलह: आँख में दाना था और वह फूट कर आँख के अन्दर ही फैल गया बाहर नहीं निकला या कान के अन्दर दाना टूटा और उसका पानी सुराख से बाहर नहीं निकला तो इन सूरतों में वुज़ू बाक़ी है;

मसअलह: बलग़म की क़य से वुज़ू नहीं टूटता जितनी भी हो।

वुज़ू के बाद की दुआ

वुज़ू के दरमियान दुरूद शरीफ पढ़ना मुस्तहब है और वुज़ू करके यह दुआ पढ़े। اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ ط

अल्लाहुम्मज्अल्नी मिनत्तौवाबीन वज्अल्नी मिनल मुततहहिरीन ★ और कलिमए शहादत भी पढ़े।

गुस्ल का बयान

गुस्ल कहते है नहाने को मगर शरीअत में नहाने का एक खास तरीका है और वह इस तरह है कि पहले इस्तिन्जा करे फिर उसके बाद जो निजासत बदन पर लगी हो उसे धो डाले फिर वुज़ू करे इसके बाद सारे बदन पर तीन मरतबा पानी बहाए।

गुस्ल के फ़राइज़ तीन हैं

(१)कुल्ली करना;(२)नाक में पानी डालना;(३)सारे बदन पर पानी बहाना।

गुस्ल की सुन्नतें

(१)गुस्ल की नीयत करना;(२)दोनों हाथों को पहले गट्टों तक तीन बार धोना;(३)बिस्मिल्लाह पढ़ना;(४)शर्मगाह को गुस्ल से पहले धोना उस पर निजासत हो या न हो;(५) वुज़ू करना;(६)तीन मरतबा सर और तमाम बदन पर पानी बहाना;(७)किब्ला की तरफ मुँह न करना;(८)तमाम बदन पर पानी मल लेना ताकि हर जगह पानी अच्छी तरह पहुंच जाए;(९)ऐसी जगह नहाना जहां कोई न देखे;(१०) पानी में कमीं या ज़्यादती न करना;(११) औरतों को बैठ कर नहाना;(११)नहाते वक्त कोई बात न करना;(१२) कोई दुआ न पढ़ना;

गुस्ल का तरीक़ा

पहले दोनों हाथ गट्टे तक धोए उसके बाद फिर जहाँ निजासत लगी हो धोए फिर इस्तिन्जा की जगह धोए और बिस्मिल्लाह पढ़ कर वुज़ू करे, कुल्ली के साथ गरारह भी करे लेकिन अगर रोजे से हो तो गरारह न करे सिर्फ कुल्ली करे नाक में नरम बांसे तक पानी ले जाये, फिर वुज़ू के बाद तमाम बदन पर थोड़ा पानी डाल कर तेल की तरह चुपड़ ले और

पहले दाहिने मूढ़े पर फिर बाए मूढ़े पर तीन बार पानी बहाए इसके बाद तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाए और बदन खूब मले ताकि कोई जगह पानी पहुंचने से बाकी न रह जाए। खुली हुयी जगह पर नंगा न नहाए मर्द को नाफ से घुटने तक और औरत को गले से टखने तक छुपाना फ़र्ज है और गुस्लखाने वगैरह में हो और जरूरत हो तो न छुपाने में कोई हरज नहीं औरत के बाल अगर गुंधे हों लेकिन जड़ों तक पानी पहुंच सकता है तो खलोने की जरूरत नहीं वरना खोलना जरूरी है अगर ज़ेवर वगैरह पहनी हो तो उसको फिरा कर सुराख में पानी को बहाए अगर मर्द के बाल औरत की तरह लम्बे हों और वह चोटी या जूड़ा बाँधें हो तो बालों को खोल कर जड़ों तक पानी पहुंचाना जरूरी है बगैर इसके गुस्ल सही नहीं होगा। (गुलज़ारे शरीअत)

तयम्मुम का बयान

वुज़ू और गुस्ल के लिए जब पानी न मिल सके या पानी नुकसान करे तो पाक मिट्टी पर पंजों समीत हथेली मार कर चेहरा और तमाम हाथों पर फेर लेना तयम्मुम कहलाता है।

तयम्मुम का तरीका

तयम्मुम में नीयत फ़र्ज है यानी नीयत करे कि नापाकी दूर करने के लिए या नमाज़ पढ़ने के लिए तयम्मुम करता हूं :- नीयत के बाद दोनो हाथों को पाक मिट्टी पर मारे फिर हाथ झाड़कर तमाप मुँह पर मले और जितना हिस्सा मुँह का वुज़ू में धोया जाता है उतने हिस्सा पर हाथ पहुँचाए फिर दुबारा मिट्टी पर हाथ मार कर हाथों को कुहनियों तक मले और उंगलियों का खिलाल भी करे वुज़ू और गुस्ल के तयम्मुम में कोई फ़र्क नहीं है और जितनी पाकी वुज़ू और गुस्ल से होती है उतनी है तयम्मुम से भी होती है।

अज़ान व अक़ामत

फ़र्ज नमाजों से पहले अज़ान देना सुन्नते मुअक्किदह है और शुआरे इस्लाम में दाखिल है जो शख्स अज़ान दे उसे चाहिए कि ऊंची जगह क़िब्ला की तरफ रूख करके खड़ा हो और कलिमा

की दोनों उँगलियों को कानों के दोनों सुराखों में डाल कर बुलन्द आवाज़ से अज़ान कहे अज़ान के बाद जमाअत से पहले अक़ामत (तकबीर) कही जाती है अकामत बिलकुल अज़ान की तरह है सिर्फ चन्द बातों का फ़र्क है :(१) अक़ामत में हय्य अलस्सलात और हय्य अलल फलाह के बाद क़द का म तिस्सलात दो बार कहे (२)अक़ामत अज़ान के मुकाबिले में जरा पस्त आवाज़ से कहे (३)अक़ामत कहते वक्त कानों के सुराखों में उँगलियां डालने की जुरुरत नहीं (४) अक़ामत मस्जिद के अन्दर कहे :-

तम्बीह: (१)अक़ामत में हय्य अलस्सलात और हय्य अलल फलाह कहते वक्त दाहिने बाए मुँह न करे(२)इमाम और मुक्तदी हय्य अलस्सलात या हय्य अलल् फ़लाह के वक्त खड़े हों :-

अज़ान का तरीक़ा

मस्जिद के बाहरी हिस्से में किसी ऊँची जगह पर किब्ला की तरफ मुँह करके खड़ा हो और कानों के सुराखों में कलिमा की उंगलियाँ डाल कर बुलन्द आवाज़ से *अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर* اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे फिर जरा ठहर कर *अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर* اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे फिर जरा ठहर कर दो बार *अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह* اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे फिर जरा ठहर कर दो बार *अश्हदु अन्-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह* اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे फिर दाहिनी तरफ मुँह फेर कर दो बार *हय्य अलस् सलात* حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ कहे फिर बाँयी तरफ मुँह करके दो बार *हय्य अलल् फलाह* حَیَّ عَلَی الْفَلَاح कहे फिर किब्ला की तरफ मुँह करे और एक बार *अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर* اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे फिर एक बार *ला इला ह इल्लल्लाह* لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे।

फज्र की अज़ान में *हय्य अलल् फलाह* के बाद दो बार *अस्सलातु खैरुम् मिनन् नौम* भी कहे। अज़ान के बाद

अज़ान के बाद की दुआ

दुरूद शरीफ पढ़े फिर अज़ान कहने वाला और अज़ान सुनने वाले सभी यह दुआ पढ़ें।

अल्लाहुम्म सल्ले अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आलेही वसल्लिम। अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद दअवतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाए मति आति सय्यिदिना मुहम्मदनिल वसी ल त वल् फ़दील त वद् द र जतर्र्फी अ त वब अस्हु मक़ामम महमू दनिल् लज़ी व अत्तहू वरज़ुक़्ना शफ़ा अ तहू यौमल क़िया मति इन्न क ला तुख़्लिफुल मीआद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَسَلِّمْ اَللّٰهُمَّ رَبَّ
هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَ ا الْوَسِيْلَةَ
وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا الَّذِىْ
وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

नमाज़ के फ़राइज़

नमाज़ में १२ फ़र्ज हैं जिनमें से चन्द ऐसे हैं जिन का नमाज़ से पहले होना ज़ुरुरी है और उनको नमाज़ के खार्ज़ी फराइज़ और शराइते नमाज़ भी कहा जाता है और चन्द फराइज़ वह हैं जो दाखिले नमाज़ हैं सबकी फिहरिस्त यह है :-

शराइते नमाज़

(१)तिहारत यानी बदन और कपड़ों का पाक होना(२)सतरे औरत यानी मर्दो को नाफ से घुटनों तक और औरतों को चहरे और हथेलियों और कदमों के अलावा तमाम बदन का ढाँकना फ़र्ज है(३)नमाज़ का वक्त होना(४)किब्ला की तरफ रुख होना(५)नमाज़ की नीयत करना :-

फराइज़े नमाज़

(१)तकबीरे तहरीमा(२)क़याम यानी खड़ा होना(३)किरअत

यानी एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें या एक छोटी सूरत पढ़ना(४)रुकूअ करना(५)सिज्दा करना(६)काअ़दए अखिरह (७)अपने इरादे से नमाज़ खत्म करना :-
अगर इनमें से कोई चीज़ भी जानकर या भूल कर रह जाए तो सिज्दए सहव करने से भी नमाज़ न होगी बल्कि दुबारा पढ़ना ज़ुरुरी होगा :-

वाजिबाते नमाज़

जैल की चीज़े नमाज़ में वाजिब हैं :-

तहरीमा में लफ़्ज़े अकबर कहना; अलहम्द पढ़ना और इसके साथ कोई सूरत मिलाना; फ़र्ज़ की पहली दो रकअतों में किरअत करना; अलहम्दु को सूरत से पहले पढ़ना; रुकूअ करके सीधा खड़ा होना; दोनो सिज्दों के दरमियान बैठना; पहला काअ़दह करना; पहले काअ़दह में अत्तहियात के बाद कुछ न पढ़ना; हर काअदह में अत्तहियात का पढ़ना; लफ़्ज़े अस्सलाम आखिर में २ बार कहना ज़ुहर व अस्र में किरअत आहिस्ता आहिस्ता पढ़ना; इमाम के लिये मग़रिब व इशा की पहली दो रक़अतों और फ़ज्र व जुम्आ व इदैन और तरावीह की सब रकअतों में बुलन्द आवाज़ से किरअ़त करना; वित्र में दुआए कुनूत का पढ़ना; इदैन में ६ तकबीरें ज़्यादा कहना;
वाजिबात में से अगर कोई वाजिब भूल कर छूट जाए तो सिज्दए सहव से नमाज़ हो जायेगी अगर कसदन किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दुबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है सिज्दए सहव से भी काम न चलेगा।

नमाज़ की सुन्नतें

तकबीरे तहरीमा के लए हाथ उठाना; हाथों की उँगलियाँ अपने हाल पर रखना; तकबीर के बाद फौरन हाथ बाँध लेना; पहले **सुब्हानक** फिर **अऊज़ु बिल्लाह** और **बिस्मिल्लाह पढ़ना**; अलहम्द के खतम पर **आमीन** आहिस्ता से कहना; रुकूअ़ में घुटनों पर हाथ रखना और उँगलियां न फैलाना; रुकूअ में कम से कम

तीन बार **सुब्हा न रब्बियल अज़ीम** कहना; ❁ रुकूअ में जाने के लिए **अल्लाहु अकबर** कहना; ❁ रुकूअ में सिर्फ इस कदर झुकना कि हाथ घुटनों तक पहुँच जाए; ❁ रुकूअ से उठते वक्त **समिअल्लाहु लिमन हमिदह** कहना सज्दे के लिए और सज्दे से उठने के लिए **अल्लाहु अकबर** कहना; ❁ सज्दे में हाथ ज़मीन पर रखना; ❁ कम से कम तीन बार **सुब्हा न रब्बियल आला** कहना; ❁ सज्दे में जाने के लिए ज़मीन पर पहले दोनों घुटने एक साथ रखना फिर हाथ, फिर नाक, फिर पेशानी और सज्दे से उठते वक्त इसके उल्टा करे यानी पहले पेशानी उठाए फिर नाक फिर हाथ फिर घुटने; ❁ दोनों सज्दों के दरमियान मिस्ले तशहहुद के वैठना; ❁ दुसरी रकअत के लिए पंजो के वल घुटनो पर हाथ रख कर उठना; दुसरी रकअ़त के सज्दों से फ़ारिग होकर बायाँ पाँव बिछा कर दाहिना खड़ा करके वैठना और औरत के लिए दोनों पाँव दाहिनी जानिब निकाल कर बाँए सुरीन पर वैठना; ❁ दाहिना हाथ दाहिनी रान पर रखना और बायाँ बायीं पर; ❁ उँगलियों को अपने हाल पर छोड़ना और उनके किनारे घुटनों के पास होना; ❁ शहादत पर इशारा करना; ❁ तशहहुद के बाद काअ़दए अखीरह में दुरुद शरीफ पढ़ना; ❁ दुरुद शरीफ के बाद अर्बी में दुआ़ करना और वेहतर वह दुआएँ हैं जो हदीसों से मंकूल हैं; ❁ **अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह** दो बार कहना पहले दाहिनी तरफ फिर बायीं तरफ; ❁ जुहर, मग़रिब और इशा के बाद मुख्तसर दुआ करके सुन्नतों के लिये खड़ा हो जाना वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा; (दुर्रे मुख्तार, आलमगीरी वगैरह)

नमाज़ के मुस्तहब्बात

❁ क़याम की हालत में सज्दा की जगह नज़र रखना; ❁ रुकूअ में पाँव की पीठ की तरफ, सज्दह में नाक की तरफ और काअ़दह में गोद की तरफ नज़र रखना- ❁ पहले सलाम में दाहने शाने की तरफ दुसरे में बाँए तरफ नज़र रखना; ❁ जमाही आए तो मुँह वन्द किये रहना अगर न रुके तो होंट दाँत के नीचे दवाए और इससे भी न रुके तो क़याम में दाहिने हाथ की पुश्त

से मुँह ढाँक ले और क़याम में न हो तो बाँए हाथ की पुश्त से और बिला ज़ुरूरत हाथ या कपड़े से मुँह ढांकना मकरूह है; तहरीमा के वक्त हाथ कपड़े से बाहर निकालना, औरत के लिये तक्बीरे तहरीमा के वक्त हाथ कपड़े के अन्दर रखना; जहाँ तक बन पड़े खाँसी को रोकना; क़याम की हालत में दोनों पंजों के दरमियान चार अंगुल का फास्ला होना;

मकरूहाते नमाज़

यह चीज़ें नमाज़ में मकरुह है :-

कोख पर हाथ रखना; आस्तीन से बाहर हाथ निकाले रखना; ★कपड़े समेटना; जिस्म के कपड़े से खेलना; उगलियाँ चटखाना; दाँए बाँए गरदन मोड़ना; मर्द को जूड़ा गूँध कर नमाज़ पढ़ना; अंगड़ाई लेना; कुत्ते की तरह बैठना; मर्द को सज्दे में हाथ जमीन पर बिछाना; सज्दे में मर्दों के लिये पेट रानों से मिलाना; बिगैर उज़्र के चार ज़ानू (आल्ती पाल्ती) बैठना; इमाम का मेहराब के अन्दर खड़ा होना; कंकरियां हटाना मगर जबकि ज़ुरूरी हो तो एक बार जाइज़ है; सामने या सर पर तस्वीर होना; तस्वीर वाले कपड़े में नमाज़ पढ़ना; कन्धें पर चादर या कोई कपड़ा लटकाना; पेशाब, पाखाना या ज़्यादा भूक का तकाज़ा होते हुये नमाज़ पढ़ना; सर खोल कर नमाज़ में खड़ा होना; आँखे बन्द करके नमाज़ पढ़ना; उँगलियाँ चटखाना या कैंची बाँधना; कमर पर हाथ रखना; धात या चैन वाली घड़ी पहन कर नमाज़ पढ़ना; फासिके मोअलिन के पीछे नमाज़ पढ़ना मस्लन जो बिला उज़्र जमाअत या नमाज़ तर्क करता हो उसके पीछे नमाज़ मकरूह है;

मुफ़्सिदाते नमाज़

इन चीजों के करने से नमाज़ फासिद हो जाती है :-

बात करना खाह थोड़ी हो या बहुत कस्दन या भूल कर; ज़बान से सलाम करना या सलाम का जवाब देना; छींकने वाले के जवाब में यर ह मुकल्लाह कहना; रंज की खबर सुन कर इन्ना

लिल्लाहि व **इन्ना एलैहि राजिऊन** पूरा या थोड़ा सा पढ़ना या अच्छी खवर सुन कर **अलहम्दु लिल्लाह** कहना या अजीब चीज सुनकर **सुबहानल्लाह** कहना; ❁दु:ख तकलीफ़ की वजह से आह, ओह या उफ़ करना; ❁अपने इमाम के सिवा किसी दुसरे को लकमा देना; ❁कुरआन शरीफ देख कर पढ़ना; ❁किरअत में ऐसी ग़लती करना जिससे नमाज़ फ़ासिद हो जाती है (जिसकी तफ्सील बड़ी किताबों में लिखी है) ❁अमले कसीर मस्लन ऐसा काम करना जिसे देखने वाला गुमान करे कि यह शख्स नमाज़ नहीं पढ़ रहा है मस्लन दोनों हाथों से काम करना; ❁कस्दन या भूल कर कुछ खाना पीना; ❁सीना किब्ला से फिर जाना; ❁दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना कि आवाज़ में हुरूफ़ निकल जाए; ❁नमाज़ में हँसना; ❁इमाम से आगे बढ़ जाना; (तिरमीज़ी)

जमाअत व इमामत का बयान

जमाअ़त की बड़ी ताकीद आई है और इसका सवाब बहुत ज़्यादा है यहाँ तक कि बे जमाअ़त की नमाज़ से जमाअ़त वाली नमाज़ का सवाब २७ गुना है। (मिश्कात जिल्द १ सफ्हा १५)

मसअलह: मर्दों को जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना वाजिब है बिला उज्र एक बार भी जमाअ़त छोड़ने वाला गुनहगार और सज़ा के लाइक है और जमाअ़त छोड़ने की आ़दत डालने वाला फासिक़ है जिसकी गवाही कुबूल नहीं की जायेगी; (रूददुल मुहतार)

मसअलह: जुम्आ व इदैन में जमाअ़त शर्त है यानी बगैर जमाअ़त यह नमाज़ें होंगी ही नहीं, तरावीह में जमाअ़त सुन्नते किफाया है यानी मुहल्ला के कुछ लोगों ने जमाअ़त से पढ़ी तो सबके ज़िम्मा से जमाअ़त छोड़ने की बुराई जाती रही और अगर सब ने जमाअ़त छोड़ दी तो सबने बुरा किया रमज़ान शरीफ में वित्र को ज़माअ़त से पढ़ना मुस्तहब है इसके अलावा सुन्नतों और नफ्लों में जमाअ़त मकरूह है; (रूद्दुल मुहतार जिल्द १ सफ्हा ३७१)

मसअलह: अकेला मुक्तदी मर्द अगरचे लड़का हो इमाम के

बराबर दाहिनी तरफ खड़ा हो बाँए तरफ या पीछे खड़ा होना मकरूह है दो मुक्तदी हों तो पीछे खड़े हों इमाम के बराबर खड़ा होना मकरूहे तन्ज़ीही है दो से ज़्यादा का इमाम के बगल में खड़ा होना मकरूहे तहरीमी है। (दुर्रे मुख़्तार जिल्द १ सफ्हा ३९१)

मसअलह: पहली सफ में और इमाम के करीब खड़ा होना अफ़ज़ल है लेकिन जनाज़ा में पिछली सफ अफ़ज़ल है; (दुर्रे मुख़्तार सफ्हा ३८३)

मसअलह: इमाम होने का सबसे ज़्यादा हक़दार वह शख्स है जो नमाज़ व तिहारत वगैरह के अहकाम सबसे ज़्यादा जानता हो फिर वह शख्स जो किरअत का इल्म ज़्यादा रखता हो अगर कई शख्स इन बातों में बराबर हों तो वह शख्स ज़्यादा हक़दार है जो ज़्यादा मुत्तकी हो अगर इस में भी बराबर हों तो ज़्यादा उम्र वाला फिर जिसके अख़्लाक़ ज्यादा अच्छे हों फिर ज़्यादा तहज्जुदगुजार गर्ज कि चन्द आदमी बराबर दर्जे के हों तो उनमें जो शरयी हैसियत से फौक़ियत रखता हो वही ज़्यादा हक़दार है;

मसअलह: फ़ासिके मोअ़लिन जैसे शराबी, ज़िनाकार-जुवाड़ी, सुदखोर, दाढ़ी मुड़ाने वाला या कटाकर एक मुश्त से कम रखने वाला इन लोगों को इमाम बनाना गुनाह है और इन लोगों के पीछे नमाज़ मकरूहे तहरीमी है और नमाज़ को दुहराना वाजिब है;

मसअलह: कादियानी, राफ्ज़ी, खार्जी, वहाबी और दूसरे तमाम बद मज़हबों के पीछे नमाज़ पढ़ना नाजाइज व गुनाह है अगर ग़लती से पढ़ली तो फिर से पढ़े अगर दुबारा नहीं पढ़ेगा तो गुनहगार होगा;

किरअत का बयान

क़िरअत यानी कुरआन शरीफ पढ़ने में इतनी आवाज़ होनी चाहिए कि अगर बहरा न हो और शोर व गुल न हो तो खुद अपनी आवाज़ सुन सके अगर इतनी आवाज़ भी न हुई तो किरअत नहीं हुई और नमाज़ न होगी।

(दुर्रे मुख़्तार जिल्द १ सफ्हा ३५९)

मसअलह: फज्र में और मग़रिब व ईशा की पहली दो रकअतों में और जुम्आ व ईदैन व तरावीह और रमज़ान की वित्र में इमाम पर जहर के साथ किरअत करना वाजिब है और मग़रिब की

तीसरी रकअत मे और इशा की तीसरी और चौथी रकअत में और जुहर व अस्र की सब रकअतो मे आहिस्ता पढ़ना वाजिब है :

मसअलह : जहरी नमाजों में अकेले को इख्तियार है चाहे ज़ोर से पढ़े चाहे आहिस्ता मगर ज़ोर से पढ़ना अफ़जल है : (दुर्रे मुख्तार सफ्हा ३५८)

मसअलह : कुरआन शरीफ उलटा पढ़ना मकरूहे तहरीमी है मसलन यह कि पहली रकअत में कुल हु वल्लाह और दुसरी में तब्बत यदा पढ़ना : (दुर्रे मुख्तार सफ्हा ३६८)

मसअलह : दरमियान से एक छोटी सूरह छोड़कर पढ़ना मकरूह है जैसे पहली में कुल हुवल्लाह और दुसरी में कुल अऊ जु बिराब्बिन्नास पढ़ी और दरमियान में सिर्फ एक सूरह कुल अऊजु बिरब्बिल फ़लक़ छोड़ दी लेकिन हाँ अगर दरमियान की सूरह पहले से बड़ी हो तो दरमियान में एक सूरह छोड़कर पढ़ सकता है।

सज्दए सहव

जो चीज़ें नमाज़ में वाजिब हैं अगर उनमें से कोई वाजिब भूल से छुट जाए तो उसकी कमी पूरी करने के लये सज्दए सहव वाजिब है और इसका तरीक़ा यह है कि नमाज़ के आख़िर में अत्तहियात पढ़ने के बाद दाहनी तरफ सलाम फेरने के बाद दो सज्दा करे और फिर अत्तिहयात और दुरुद शरीफ और दआ पढ़ कर दोनों तरफ सलाम फेर दे :-
अगर कसदन किसी वाजिब को छोड़ दिया तो सज्दए सहव काफी नहीं बल्कि नमाज़ को दुहराना वाजिब है : (दुर्रे मुख्तार)

मसअलह : एक नमाज़ में अगर भूल से कई वाजिब छूट गए तो एक बार वही दो सज्दए सहव के सबके लिए काफी है चन्द बार सज्दए सहव की जुरुरत नहीं। (दुर्रे मुख्तार सफ्हा ४९७)

मसअलह : पहले क़अदह में अत्तहियात पढ़ने के बाद तीसरी रकअत के लये खड़े होने में इतनी देर लगा दी कि अल्लाहुम्म सल्ले अ़ला मुहम्मदिन पढ़ सके तो सज्दए सहव वाजिब है चाहे कुछ पढ़े या खामोश रहे दोनों सूरतों में सज्दए सहव वाजिब है

इसलिये ध्यान रखे कि पहले क़अदह में अत्तिहयात खत्म होते ही फौरन तीसरी रक़अत के लिए खड़ा हो जाए।

नमाज़ पढ़ने का सही तरीका

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है कि बा वज़ू क़िब्लारु दोनों पांव के पंजों में चार अंगुल का फासिला करके खड़ा हो और दोनों हाथ कान तक ले जाए कि अंगूठे कान की लौ से छू जाएँ इस हाल में कि हथेलियाँ किब्लारुख हो फिर नीयत करके अल्लाहु अकबर اَللّٰهُ اَكْبَرْ कहता हुआ हाथ नीचे लाकर नाफ के नीचे बाँध ले और सना पढ़े।

सुब्हानकाअल्लाहुम्म व वि हम् दिक व तबारकस्मुक व तआला जद्दुक व लाइलाह गैरुक

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

इसके बाद **अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम** اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ फिर **बिस्मिल्लाहि रहमानिर्रहीम** بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़कर अलहम्द शरीफ (सूरह फ़ातिहा) पढ़े जब सुरए फ़ातिहा खत्म हो जाये तो आहिस्ता से आमीन कहें फिर इसके बाद **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम** पढ़ कर कोयी सुरह या क़ुरआन मजीद की कम से कम एक बड़ी या तीन छोटी आयतें पढ़ें।

अब **अल्लाहु अकबर** कहता हुआ रुकूअ में जाए और घुटनों को हाथ से पकड़ ले इस तरह कि हथेलियाँ घुटने पर हों उँगलियाँ खूब फैली हों पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर हो ऊँचा नीचा न हो और कम से कम तीन बार **सुब्हान रब्बियल अज़ीम**

سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ कहे फिर समीअल्लाहुलिमन हमीदह
"سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ" कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाए और अकेले
नमाज़ पढ़ता हो तो इसके वाद रब्बनालकलहम्द "رَبَّنَالَكَ الْحَمْدُ"
कहे फिर अल्लाहुअकबर कहता हुआ सज्दा में जाए इस तरह कि
पहले घुटने ज़मीन पर रक्खे फिर हाथ फिर दोनों हाथों के वीच में नाक
फिर पेशानी रक्खे इस तरह कि पेशानी और नाक की हड्डी ज़मीन पर जम
जाए और वाज़ुओं को करवटों और पेट को रानों और रानों को पिन्डलियों
से जुदा (अलग) रक्खे और दोनों पांव की सव उगलियों के पेट क़िब्लारु
जमे हों और हथेलियाँ विछी हों और उगलियाँ क़िब्ला को हों और कम से
कम तीन वार सुब्हानरब्बियल आअ्ला "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی"
कहे फिर सर उठाए फिर हाथ और दाहिना क़दम खड़ा करके इसकी
उगलियां क़िब्ला रुख करे और वायां क़दम विछा कर उसपर खूव सीधा
बैठ जाए और हथेलियाँ विछा कर रानों पर घुटनों के पास रक्खे फिर
अल्लाहु अकवर कहता हुआ सज्दा में जाए और पहले की तरह सज्दा
करके फिर सर उठाए फिर हाथ को घुटनों पर रखकर पंजों के वल
खड़ा हो जाए अव सिर्फ बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
पढ़कर किरअत शुरु करे फिर पहले की तरह रुकुअ, सज्दा करके
वायां कदम विछा कर बैठ जाए और तशहहुद पढ़े

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवा तु वत्तैय्यिबातु ० अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरका तुहू अस्सलामु अलैना व अला इबा दिल्लाहिस्सालिहीन ० अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰہِ وَالصَّلَوٰاتُ وَالطَّیِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ
اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَكَاتُہٗ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَ
عَلٰی عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ ط اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا
اللّٰہُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ

तशह्हुद पढ़ते हुये जब कलिमा **ला** के करीब पहुँचे तो दाहिने हाथ की बीच की उगली और अंगूठे का हल्का बनाए और छंगुलिया और उसके पास वाली को हथेली से मिला दे और लफ़्ज़े **ला** पर कलिमा की उगली उठाए मगर इधर उधर न हिलाये और कलिमए **इल्ला** पर गिरा दे और सब उगलियाँ फौरन सीधी कर ले अब अगर दो से ज्यादा रकअतें पढ़नी हैं तो उठ खड़ा हो और उसी तरह पढ़े मगर फ़र्जों की उन रकअतों में **अलहम्दु** के साथ **सूरह** मिलाना जुरूरी नहीं अब पिछला क़ाअदह जिसके बाद नमाज़ खतम करेंगे उसमें तशह्हुद के बाद **दुरूद शरीफ** पढ़े-

अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यिदिना मुहम्मदिँव अला आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन् कमा सल्लै त अला सैय्यिदिना इब्राही म व अला आले सैय्यिदना इब्राही म इन्नक हमीदुम् मजीद ० अल्लाहुम्म बारिक अला सैय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन् कमा बारक् त अला सैय्यिदिना इब्राही म व अला आले सैय्यिदिना इब्राही म इन्न क हमी दुम्मजीद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَ
عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط

फिर दुआए मासूरह पढ़े :

अल्लाहुम्म इन्नी ज़लमतु नफ्सी जुल्मन कसीरँव व ला यग़फिरुज़् जुनूब इल्ला अन्त फ़ग़फिरली मग़फिरतम् मिन् इन्दिक वर्हमनी इन्न क अन्तल गफूरुर्रहीम ०

इसके बाद पहले दाहिने कन्धे की तरफ मुँह करके **अस्सलामु**

अलैकुम व रहमतुल्लाहि السلام علیکم ورحمۃ اللہ
कहे फिर बाँये कन्धे की तरफ मुँह करके सलाम कहे। अब नमाज़ पूरी हो गयी। सलाम करने के वक्त यह ख्याल करें कि मैं फरिशतों को सलाम कर रहा हूँ। अब हाथ उठाकर जो जी चाहे अल्लाह से दुआ मांगे और दुआ खत्म करने के बाद दोनों हाथ मुँह पर फेर ले।

जरूरी याददास्त फर्ज़ नमाज़ की तीसरी और चौथी रकअत में अल्हम्दु के बाद सूरत नहीं पढ़ी जाती। सिर्फ अल्हम्दु पढ़कर रुकू और सजदह कर ले और आखरी रकअत के बाद बैठकर अत्तहियात पढ़े और इसके बाद दुरूद शरीफ और दुआ पढ़ कर सलाम फेरे और हाथ उठाकर दुआ मांगे।
सलाम फेर कर इमाम दायें या बायें तरफ मुँह कर ले इसलिए कि सलाम के बाद मुक्तदियों की तरफ पीठ करके बैठना मक्रूह है। फ़र्ज़ नमाज़ के बाद खास तौर से दुआ कुबूल होती है। सलाम फेर कर अल्लाह तआला से दीनी व दुनयावी हाजात और जरूरतों के लिये दुआ करे।

नमाज़ के बाद की दुआऐं व अज़कार

इस्तग़फार-
अस्तग़फिरुल्लाह रब्बी मिन् कुल्ले जम्बिवँ व अतूबु इलैहि इसके बाद जो दुआ चाहे पढ़े।

अल्ला हुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु व इलै-क-यरजिउस्सलामु फहैय्यिना रब्बना बिस्सिल्लामि व अद् खिल्ना दारस्सलामि तबारक् त रब्बना व तआलै त या ज़ल्जलालि वल् इक्रामि

اللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَإِلَيْكَ يَرْجِعُ

اَلسَّلَامُ فَحَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ
وَتَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط

जिन फ़र्जों के बाद सुन्नतें पढ़नी हैं उन फ़र्ज़ों के बाद मुख्तसर सी दुआ करे जैसा कि ऊपर दुआ लिखी गयी फिर जल्दी सुन्नतें पढ़े वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जायेगा और बाकी अज़कार व वजाईफ सुन्नतों के बाद पढ़े और जिन फ़र्जों के बाद सुन्नतें नहीं उन के बाद यह अज़कार भी हैं।

अज़कार :- हर नमाज़ के बाद ३३ बार सुब्हानल्लाहि... سُبْحَانَ اللّٰهِ ३३ बार अल्हम्दु लिल्लाहि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
३४ बार अल्लाहु अकबर اَللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़े-

आयतुल्कुर्सी- फ़र्ज़ नमाज़ो के बाद आयतुल्कुर्सी पढ़ने की बड़ी फज़ीलत है इसको भी पढ़े।

अल्लाहु लाइला हु इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु ० ला ता खुज़ुहू सि न तुंव व ला नौम ० लहू मफ़िस्समावा ति व माफ़िल् अर्दी मन ज़ल्लज़ी यश् फ़ अो इन् द हू इल्ला बि इज़्निहि यअ़ ल मु मा बै न अयदीहिम व मा खल् फ़ हुम वला युहीतू न बिशयइम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शा अ व सि अ कुर्सियुहुस्समावाति वल अर्द ० वला य ऊ दु हू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल अलीयुल अज़ीम ०

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ
كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ

नमाज़े वित्र

नमाज़े वित्र वाजिब है। अगर यह छूट जाये तो इसकी कज़ा लाज़िम है। इसका वक्त ईशा की फर्ज़ के बाद से सुब्हे सादिक तक है। बेहतर यह है कि आखिर रात में तहज्जुद के साथ पढ़ी जाये लेकिन जिसको खौफ हो कि उठ नहीं सकेगा वह ईशा की नमाज़ के साथ सोने से पहले पढ़ ले। इसकी तीन रकअतें हैं। दो रकअत पढ़कर क़ाअदह किया जाये और तशह्हुद पढ़कर खड़ा हो जाये। तीसरी रक़अत में ***बिस्मिल्लाह,*** ***सूरह फातिहा*** और ***सूरत*** पढ़कर दोनों हाथ कानों तक उठाये और ***अल्लाहुअकबर*** कहता हुआ हाथ बाँध ले और ***दुआए कुनूत*** आहिस्ता पढ़े कि यह वाजिब है।

दुआए कुनूत

अल्लाहुम्म इन्ना नस त इ नु क व नस्तग़्फ़िरु क व नुअ् मिनु बि क व न त वक्कलु अलै क व नुस्नी अलैकल ख़ैर व नशकुरु क वला नक्फुरु क व नख़ ल ओ व नतरुकु मँय्यफजुरु क ० अल्लाहुम्म ईय्या क न अबुदु व ल क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै क नसआ व नहफिदु व नरजु रह् म त क व नख़्शा अजा ब क इन्न अज़ा ब क बिल कुफ्फारि मुल् हिक०

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَ
نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا
نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ
رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ

अगर दुआए कुनूत याद न हो तो यह दुआ पढ़े

रब्बना आतिना फिद् दुनिया ह स न तवँ व फिल आखि र ति ह स न तवँ व क़िना अज़ाबन्नार॰

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

अगर यह भी याद न हो तो तीन वार यह पढ़े अल्लाहुम्मग्फिर लना॰ नमाज़े वित्र पढ़ने के बाद तीन वार यह पढ़े सुब्हानल् मलिकिल्कुद्दुस

मसअला: अगर दुआए कुनुत पढ़ना भूल गया या किसी को दुआए कुनूत याद न हो और रुकूअ में चला गया तो वापस न लौटे बल्कि सज्दए सह्व कर ले।

मसअला: भूल कर पहली या दूसरी रक़अत में दुआए कुनूत पढ़ ली तो तीसरी में फिर पढ़े।

औरतों की नमाज़

औरतें तकबीरे तहरीमा के वक्त कानों तक हाथ न उठायें बल्कि मूढ़े तक उठायें। हाथ नाफ के नीचे न बाँधें बल्कि बायीं हथेली सीना पर छाती के नीचे रखकर उसकी पीठ पर दाहिनी हथेली रक्खें, रुकुअ में ज्यादा न झुकें बल्कि थोड़ा झुकें यानी सिर्फ इस कद्र झुकें कि हाथ घुटनों तक पहुंच जाए पीठ सीधी न करें और घुटनों पर जोर न दें बल्कि महज हाथ रख दें और हाथों की उँगलियां मिली हुयी रक्खें और पांव कुछ झुका हुआ रक्खें। मर्दों की तरह खूब सीधा न कर दें। औरतें सिमट कर सज्दा करें यानी बाज़ू करवटों से मिलादें और पेट रानों से और रान पिण्डलियाँ से और पिंडलियाँ जमीन से और काअदह में बाँए कदम पर न बैठें बल्कि दोनों पांव दाहिनी तरफ निकाल दें और बायीं सुरीन पर बैठें। औरतें भी खड़ी हो कर नमाज पढ़ें। बहुत सी औरतें फ़र्ज़ और वाजिब व सुन्नत सारी नमाज़ें बैठकर पढ़ती हैं यह बिल्कुल गलत तरीका है, नफ्ल के सिवा कोई नमाज़ भी बिला उज़्र के बैठ कर पढ़नी जाइज़ नहीं। फ़र्ज और वाजिब जितनी नमाजें बिगैर **उज़्रे शरई** बैठ कर पढ़

चुकी हैं उनकी क़ज़ा करें और तौबा करें। औरत मर्द की इमामत हरगिज नहीं कर सकती और सिर्फ औरतें जमाअत करें यह मकरूहे तहरीमी और नाजाइज है। औरतों पर जुम्आ और इदैन की नमाज वाजिब नहीं। पंज वक्ता नमाज़ों के लिए भी मस्जिद में जाना मना है।

११ सूरह

सूरए फातिहा : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमी न ० अर्रहमानिर रहीमि ० मालि कि यौमिद्दीनि ० ईय्या क नअबुदु व ईय्या क नस्तइनु ० इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ी म ० सिरातल्लज़ी न अनअम् त अलैहिम ० गैरिल मग़दूबि अलैहिम व लद्दाल्लीन० (आमीन)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۗ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۗ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

सूरए इन्शिराह : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अलम् नश्रह ल-क सद्रक ० व वदअ्ना अन् -क विज़रक ० ल्लज़ी अन्-क-द ज़हरक ० व रफ़अ्ना ल-क जिक्रक ० फ़-इन्-न मअल् ऊस्रि युस्रा ० इन्-न मअल् ऊसरि युस्रा० फ़ इज़ा फ़रग़्-त फ़न्सब ० व इला रब्बि-क फ़रग़ब०

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝٢ الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٧ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

सूरए कद्र : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

इन्ना अन्-ज़ल्-नाहु फ़ी लैलतिल् कद्रि० व मा अद-रा-क मा लैलतुल् कदिर० लैलतुल कद्रि खैरूम् मिन् अल्फ़ि शहरिन् तनज़्ज़लुल्-मलाइकतु वर-रूहु फीहा बिइज़्नि रब्बिहिम मिन् कुल्लि अम् रिन् ० सलामुन् हि-य-हत्ता मत्लइल फ़ज्रि०

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ۝١ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ۝٢

لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝٣ تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ

فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝٤ سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ۝٥

सूरए ज़िलज़ाल : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

इज़ा जुल ज़िलतिल अर्दु ज़िल ज़ा लहा ० व अख़ र जतिल अर्दु असक़ा लहा ० व क़ा लल इनसानु मालहा ० यौ मए ज़िन तु हद्दिसु अख़बा रहा ० बि अन्-न रब्ब क औ हा लहा ० यौ मए ज़ीं यस्दु रून्नासु अशता तल ० लि यु रौ अअ् मा लहुम ० फ़ मँय्या अ्मल मिस क़ा ल ज़ र्र तिन खै रँय्य रह ० व मँय्या अ्मल मिसक़ा ल ज़र्र तिन शर् रँय्य रह०

إِذَا زُلْزِلَتِ ٱلْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١ وَأَخْرَجَتِ ٱلْأَرْضُ

أَثْقَالَهَا ۝٢ وَقَالَ ٱلْإِنسَٰنُ مَا لَهَا ۝٣ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ

أَخْبَارَهَا ۝٤ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝٥ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ ٱلنَّاسُ

أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا۟ أَعْمَٰلَهُمْ ۝٦ فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

خَيْرًا يَرَهُۥ ۝٧ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ ۝٨

सूरए आदियात : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

वल आदियाति दब हन ० फ़ल मूरियाति क़द हन ०
फ़ल मुग़ी राति सुब हन ० फ़ अ सर न बिही नक़
अन ० फ़ व सत् न बिही जम अन ० इन्नल इन्सा न
लि रब्बि ही ल क नूद ० व इन्नहू अला ज़ालि क ल
शहीद ० व इन्नहू लि हुब्बिल ख़ैरि ल शदीद ० अ
फ़ला याअ् लमु इज़ा बु अ सि र मा फ़िल् कुबूरि ० व
हुस्सि ल मा फ़िस् सुदूरि ० इन्-न रब्ब हुम बि हिम
यौ मए ज़िल् ल ख़बीर०

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ١ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ٢ فَالْمُغِيْرٰتِ
صُبْحًا ۙ٣ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ٤ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ٥
اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ٦ وَاِنَّهٗ عَلٰى
ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ٧ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ٨
اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ٩ وَحُصِّلَ
مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ١٠ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ
لَّخَبِيْرٌ ١١

सूरए क़ारिआ : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल क़ारि अ तु ० मल क़ारिअह ० व मा अद्रा क
मल् क़ा रिअह ० यौ म यकू नुन्नासु कल फ़रा शिल
मब सूस ० व तकूनुल् जिबालु कल ईह् निल मन
फ़ूशि ० फ़ अम्मा मन् स कु लत् म वा ज़ी नुहू ० फ़ हु
व फ़ी ई शतिर रादि यह ० व अम्मा मन ख़फ़्फ़त्
मवाज़ी नुहू ० फ़ उम्मुहू हा वीयह ० वमा अद्रा क
माहियह ० नारून हामियह०

الْقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٣﴾
يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ﴿٤﴾ وَتَكُونُ
الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ ﴿٥﴾ فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ﴿٦﴾
فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ﴿٨﴾
فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

सूरए तकासुर : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल्हा कुमुत तकासुरु ० हत्ता ज़ुरतु मुल् मक़ा बि र
० कल्ला सौ फ़ ता अ् लमू न ० सुम्-म कल्ला सौ फ़
ता अ् ल मू न ० कल्ला लौ ता अ् लमू न ईल मल
यक़ीन ० ल त र वु न्नल जही म ० सुम्-म ल त र वुन्न
हा ऐनल यक़ी न ० सुम्-म ल तुस् अ लुन्-न यौ मई
ज़िन अनिन् नईमि०

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾ كَلَّا سَوْفَ
تَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ
عِلْمَ الْيَقِينِ ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ﴿٦﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا
عَيْنَ الْيَقِينِ ﴿٧﴾ ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ﴿٨﴾

सूरए अस्र : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

वल अस्रि ० इन्नल् इन्सा न लफ़ी ख़ुस्रिन ०
इल्लल्लज़ी न आ मनू व अ मिलुस् सालिहाति व त
वा सौ बिल हक़्क़ ० व त वा सौ बिस् सब् रि०

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣

सूरए हु म ज़ह : **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

वै लुल लि कुल्लि हु म ज़तिल लु म ज़ति ० निल्लज़ी ज म अ मा लौंव व अद्द दह ० यह सबु अन्-न मा लहु अख़्ल दह ० कल्ला ल युम ब ज़न्न फिल हु त मति ० व मा अदरा क मल् हु त मह ० नारुल्ला हिल् मू क़ द तुल ० लती तत्-त लिओ अलल् अफ़् इ दह० इन्नहा अलैहिम् मुअ् स द ० फ़ी अ म् दिम मु मद् द दह०

وَیْلٌ لِّکُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِۣ ۝١ الَّذِیْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢ یَحْسَبُ
اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَیُنْۢبَذَنَّ فِی الْحُطَمَةِ ۝٤ وَمَاۤ
اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِیْ تَطَّلِعُ
عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا عَلَیْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِیْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

सूरए फ़ील : **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

अलम् त-र कै-फ़ फ़-अ ल रब्बु क बि अस्हा बिल फ़ीलि० अ लम् यजअ्ल कै दहुम् फ़ी तदलीलिंव० व अर स ल अलै हिम् तैरन अबाबील ० तरमी हिम् बि हिजा र तिम् मिन् सिज्जील ० फ़ ज़अ ल हुम् क़अस् फ़िम् मा कूल०

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ
كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣
تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

सूरए कुरैश : **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

ले ईला फ़ि कुरैशिन ० ई ला फ़ि हिम् रिह् लतश् शिताए वस्सैफ़० फ़ल याअ् बुदू रब्-ब हाज़ल बैतिल ० लज़ी अत् अ म हुम् मिन् जू ईंव० व आ म न हुम् मिन् ख़ौफ़०

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢
فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ
جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

सूरए माऊ़न : **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

अ र ऐ तल्लज़ी यु कज़्ज़िबु बिद्दीनि ० फ़ ज़ालि कल लज़ी य दुअ् ऊल यती म ० वला य हुद्दु अला त आ मिल मिस्कीनि० फ़वै लुल् लिल् मुसल्ली नल् ० लज़ी न हुम् अन सला तिहिम् सा हू नल् ० लज़ी न हुम् यूरा ऊन ० व यम् न ऊनल् माऊन०

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ
الْيَتِيْمَ ۝٢ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣ فَوَيْلٌ

لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ ٥
الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ ٦ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۚ ٧

सूरए कौसर : **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

इन्ना आअ्तैना कल् कौसर ० फ सल्लि लिरब्बि क वन्हर ० इन्-न शानि अ क हुवल अब्-तर ०

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۭ ١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۭ ٢

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۧ ٣

सूरए काफ़िरून : **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

कुल या अय्युहल काफ़िरू न ० ला आअ्बुदु मा ताअ् बुदू न ० व ला अन्तुम् आबिदू न मा आअ्बुद ० व ला अना आबिदुम् मा अ बत्तुम ० वला अनतुम् आबिदू न मा आअ्बुद ० लकुम दीनुकुम वलि यदीन०

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ ١ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ ٢ وَلَآ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ ٣ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ ٤ وَلَآ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۭ ٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۧ ٦

सूरए नस्र : **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

इज़ा जा अ नस्रुल्लाहि वल फ़त्हु० व र ऐतन्ना स यद ख़ुलू न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा० फसब्बिह बिहम्दि रब्बि क वस्तग़फिर हु- इन्नहू का न तव्वाबा०

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝١ وَرَاَيْتَ النَّاسَ
يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٢ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

सूरए लहब : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

तब्बत यदा अबी ल ह बिंव व तब्ब ० मा अग्ना
अन्हु मालुहू व मा क स ब ० स यस्ला नारन ज़ा त
ल ह बिंव ० वम्र अतुहू हम्मा लतल् ह त़बि० फ़ी
जीदिहा हब्लुम् मिम्मसद ०

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا
كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ
حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

सूरए इख़्लास : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

कुल् हु वल्लाहु अहद ० अल्लाहुस् समद ० लम् यलिद्
वलम् यूलद् ० वलम् यकु ल्लहु कुफुवन् अहद ०

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

सूरए फ़लक़ : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

कुल् अऊज़ु बिरब्बिल् फ़ल क़ि ० मिन् शर्रि मा
ख़ल क़ ० व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा वक़ब
० व मिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल् उक़दि ०
व मिन शर्रि हासिदिन् इज़ा हसद ०

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَ
مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ
فِی الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

सूरए नास : ***बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम***

कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि ० मलिकिन्नासि इलाहिन्नासि ० मिन शर्रिल वस्वासिल-ख़न्नासिल० लज़ी यु वस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि ० मिनल् जिन्नति वन्नास०

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ
النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۝ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِیْ
یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

जनाज़ा का बयान
मय्यित के नहलाने का तरीका

मय्यित को नहलाना फ़र्ज़े किफाया है बाज लोगों ने गुस्ल दे दिया तो सब से साकित हो गया नहलाने का तरीका यह है कि जिस चारपायी या तख्त या तख्ता पर नहलाने का इरादा हो उसको तीन या पाँच या सात बार धुनी दें यानी जिस चीज में वह खुश्बू सुलगती हो उसे उतनी बार चारपाई वगैरह के गिर्द फिराए और उस पर मय्यित को लिटा कर नाफ से घुटने तक किसी कपड़े से छुपा दे फिर नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले इस्तिन्जा कराए फिर नमाज के ऐसा वुज़ू कराए यानी मुँह फिर कुहनियों समीत हाथ धोए फिर सर का मसह करे फिर

पाँव धोए मगर मैइत के वुज़ू में गट्टों तक पहले हाथ धोना और कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है हाँ कोयी कपड़ा या रूई की फरेरी भिगोकर दाँतों और मसूढ़ों और होंटो, नथनों पर फेर दे फिर सर और दाढ़ी के बाल हों तो गुल खैरु से धोये यह न हो तो पाक साबुन बेसन या यह न हो तो खाली पानी ही काफी है फिर बाँए करवट पर लिटा कर सर से पाँव तक बेरी का पानी बहाए कि तख़्ता तक पहुँच जाए फिर दाहनी करवट पर लिटा कर यूँ ही करें और बेरी के पत्ते का उबाला हुआ पानी न हो तो खालिस पानी नीम गर्म काफी है फिर टेक लगा कर उठाए और नर्मी के साथ नीचे को पेट पर हाथ फेरे अगर कुछ निकले तो धो डाले वुज़ू और गुस्ल दुबारा न कराए फिर आखिर में सर से पांव तक काफूर का पानी बहाए फिर इसके बदन को किसी कपड़े से धीरे धीरे पोंछ दें।

इन्तिबाह : एक बार सारे बदन पर पानी बहाना फर्ज़ है और तीन मरतबा सुन्नत जहाँ गुस्ल दें मुस्तहब यह है कि परदा कर लें कि सिवाए नहलाने वालों और मददगारों के दुसरा न देखे।

मसअला: वुज़ू पहले होना चाहिये नहलाने के बाद वुज़ू ग़लत है।

कफ़न का बयान

मय्यित *को कफ़न देना फर्ज़ किफ़ाया है। कफ़न के तीन दर्जे होते हैं* (१) *ज़ुरुरी* (२) *किफायत* (३) *सुन्नत, मर्द के लिये कफ़ने सुन्नत* तीन कपड़े हैं, ***लिफाफा, एजार, कमीज*** और औरत के लिए कफने सुन्नत पांच कपड़े हैं- ***लिफाफा, एज़ार क़मीज़, ओढ़नी*** और सीना बन्द।

कफने किफायत मर्द के लिए दो कपड़े हैं लिफाफा व एजार औरत के लिए कफन किफायत तीन कपड़े हैं लिफाफा, एजार, ओढ़नी या लिफाफा, कमीज, ओढ़नी।

कफ़ने ज़ुरुरत मर्द औरत दोनों के लिये जो मयस्सर आए और कम से कम इतना तो हो कि सारा बदन ढ़क जाए। (आलमगीरी वगैरह)

कफ़न पहनाने का तरीका

मय्यित के गुस्ल देने के बाद बदन किसी पाक कपड़े से आहिस्ता से पोंछ ले ताकि कफ़न तर न हो और कफ़न को एक या तीन या पाँच या सात बार धूनी दे ले इससे ज्यादा नहीं फिर कफ़न यूँ बिछाए कि पहले बड़ी चादर फिर एजार (तहबन्द) फिर कफनी फिर मय्यित को उस पर लिटाए और कफनी पहनाए और दाढ़ी और तमाम बदन पर खुश्बू मले और मवाजए सुजूद यानी माथे नाक, हाथ, घुटने और कदम पर काफूर लगाए फिर एजार (तहबन्द) लपेटे पहले बाएँ फिर दाएँ तरफ से फिर लिफाफा लपेटे पहले बाएँ फिर दाएँ तरफ से ताकि दाहिना ऊपर रहे और सर और पाँव की तरफ बाँध दें कि उड़ने का डर न रहे औरत को कफ़न पहनाकर उसके बाल के दो हिस्से करके कफनी के ऊपर सीना के ऊपर डाल दे और ओढ़नी आधी पीठ के नीचे से बिछा कर सर पर लाकर मुँह पर मिस्ले नकाब के डाल दे कि सीना पर रहे कि इसकी लम्बायी आधी पीठ से सीना तक है और चौड़ायी एक कान की लौ से दुसरे कान की लौ तक और यह जो लोग किया करते हैं कि जिन्दगी की तरह उढ़ाते हैं, ग़लत व खिलाफे सुन्नत है फिर बदस्तूर एजार व लिफाफा लपेटे फिर सबके ऊपर सीना बन्द पिस्तान के ऊपर से रान तक लाकर बाँधे।

नमाज़े जनाज़ा का तरीका

जनाजा की नमाज फ़र्ज़े किफ़ाया है कि एक ने भी पढ़ली तो सब बरीउज़्ज़िमा हो गये वरना जिस जिसको खबर पहुंची थी और न पढ़ी गुनहगार हुआ इसकी फ़र्ज़ियत का जो इनकार करे वह काफ़िर है।

नमाजे जनाजा के पहले यूँ नीयत करे :

नवैतु अन ओ वदिद य लिल्लाहि त आला अर ब अ तकबीराति सलातिल जना ज़ति अस्सना ओ लिल्लाहि त आला वद दु आ ओ लिहा ज़ल मय्यिति इक्तदयतु बिहा ज़ल इमामि मु त वज्जिहन एला जि ह तिल का अबतिश् शरीफ़ति अल्लाहु अकबर

نَوَيْتُ اَنْ اُؤَدِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی اَرْبَعَ تَکْبِیْرَاتِ صَلٰوۃِ الْجَنَازَۃِ ۝ اَلثَّنَاءُ لِلّٰهِ تَعَالٰی وَالدُّعَاءُ لِھٰذَا الْمَيِّتِ اِقْتَدَيْتُ بِھٰذَا الْاِمَامِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْکَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَکْبَرُ ط

फिर कान तक हाथ उठाकर अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ नीचे लाए और नाफ के नीचे हस्बे दस्तूर बाँध ले और सना पढ़े यानी

सुब्हा नकल्लाहुम्म व बिहम्दि क व तबारकस्मु क व तआला जद्दु क व जल्ल सनाओ क व लाइला ह ग़ैरु क

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُکَ ط

फिर बगैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और दुरुद शरीफ पढ़े बेहतर दुरुद शरीफ वही है जो नमाज में पढ़ा जाता है अगर कोयी दूसरा दुरुद पढ़े जब भी हर्ज नहीं फिर बगैर हाथ उठाए **अल्लाहु अकबर** कहे और इसके बाद अपने और मय्यित के लिए नीज तमाम मोमिनीन व मुमिनात के लिए, दुआए जनाज़ा, पढ़कर अल्लाहु अकबर कह के दोनों हाथ छोड़ दे और दोनों तरफ सलाम फेर दे।

नोट : मय्यित अगर नाबालिग लड़का है तो तीसरी तकबीर के

बाद वह दुआ पढ़े जो नाबालिग लड़का के लिए है और अगर नाबालिग लड़की है तो वह दुआ पढ़े जो नाबालिग लड़की के लिए है और जिसे याद न हो बच्चों के लिये भी बड़ी मैइत की दुआ पढ़ले।

क़ब्र में मैय्यित के उतारने वगैरह की दुआ

मय्यित की आँखे बन्द करते वक्त, उसके आअज़ा को सीधा करते वक्त गुस्ल के वक्त कफन पहनाने के वक्त, चारपायी या ताबूत वगैरह पर रखते वक्त और क़ब्र में मय्यित के उतारते वक्त यह दुआ मुस्तहब है।

बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम.

بِسْمِ اللهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

कब्र पर मिट्टी देते वक्त यह पढ़े

पहली दफा-**मिनहा खलक़नाकुम०** مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ

दूसरी दफा-**व फीहा नुईदुकुम०** وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ

तीसरी दफा - **व मिनहा नुखरिजुकुम तारतन उख़्रा**

وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى

दुआए जनाज़ह

बड़ी मैय्यित के लिए :

अल्लाहुम्मग़ फिरलि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़ करिना व उनसाना अल्लाहुम्म मन् अहयैय त हू मिन्ना फ़ अहयिही अलल् इस्लामि व मन् त वफ़्फ़य तहू मिन्ना फ़ त वफ़्फ़हू अलल ईमान

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِحَیِّنَا وَمَیِّتِنَا وَشَاھِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِیْرِنَا وَکَبِیْرِنَا وَذَکَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰھُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَهٗ مِنَّا فَاَحْیِهٖ عَلَی الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّیْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَی الْاِیْمَانِ

नाबालिग़ लड़के के लिए :

अल्लाहुम्मज्ज अलहु लना फर तँव वज़्अलहु लना अज्रँव व ज़ुख़् रँव वज़् अलहु लना शाफ़िओं व मुशफ़्फ़अन्०

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

नाबालिग़ लड़की के लिए :

अल्लाहुम्मज्ज अलहा लना फ र तँव वज् अलहा लना अज् रँव व ज़ुख् रँव वज् अलहा लना शाफिअतँव व मुशफ़्फ़अतन् ०

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْھَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْھَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

दुआए अक़ीक़ह

अल्लाहुम्म हाज़िही अक़ीकतुब्नी फुलानिन द मु हा बि द मिही व लहमुहा बि लहमिही व अज़मुहा बि अज़्मिही व जिलदुहा बिजिल्दिही व शअ़रुहा बि शअ़्रिही अल्लाहुम्मज्ज़अल्हा फिदाअल लि इब्नी मिनन्नार बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर०

اَللّٰھُمَّ ھٰذِهٖ عَقِیْقَةُ ابْنِیْ فُلَانٍ دَمُھَا بِدَمِهٖ وَلَحْمُھَا بِلَحْمِهٖ وَعَظْمُھَا بِعَظْمِهٖ وَجِلْدُھَا بِجِلْدِهٖ وَشَعْرُھَا بِشَعْرِهٖ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا فِدَاءً لِّابْنِیْ مِنَ النَّارِ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَکْبَرُ

अगर बाप जिब्ह करने वाला हो तो ऐसा कहे वरना दुसरा इन्नी की जगह फलाँ यानि उस लड़के का नाम वालिद के नाम के साथ ले – (जैसे मुहम्मद औन कादरी बिन मुहम्मद मुशाहिद हुसैन कादरी)

लड़की के लिए यह दुआ पढ़े :

अल्लाहुम्म हाजिही अकीक़तु बिन्ती फुला न तिन दमुहा बि दमिहा व लहमुहा बि लहमिहा व अज़मुहा बि अज़मिहा व जिल्दुहा बि जिल्दिहा व शअ्रोहा बि शअ्रिहा अल्लाहुम्मज़ अल्हा फ़िदा अल लि बिन्ती मिनन् नार – बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर०

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ بِنْتِيْ فُلَانَةٍ دَمُهَا بِدَمِهَا وَلَحْمُهَا
بِلَحْمِهَا وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا
بِشَعْرِهَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِّبِنْتِيْ مِنَ النَّارِ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयते कुर्बानी

इन्नी वज्जहतु वजहि य लिल्लज़ी फ त रस्समावाति वल अर द हनीफँव व मा अना मिनल मुशरिकीन। इन्न सलाति व नुसुकी व मह्या य व म माती लिल्लाहि रब्बिल आ ल मी न। ला शरी क लहू व बिज़ालि क उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्म मिन् क व ल क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّ
مَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

पढ़कर *ज़िब्ह* करे। *ज़िब्ह* के बाद अगर अपनी तरफ से कुरबानी की है तो इस तरह कहे-

अल्लाहुम्म तक़ब्बल्हु मिन्नी कमा तक़ब्बल त मिन ख़लीलि क सय्यिदिना इब्राही म व हबीबि क सय्यिदिना मुहम्मदिन अलैहिस्सलातु वसल्लाम् ०

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ
وَحَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ط

अगर किसी दुसरे के नाम से करे तो लफ्ज़ **मिन्नी** की जगह मिन फलाँ इब्न फलाँ कहे **(जैसे मुहम्मद मुशाहिद हुसैन कादिरी इब्न एजाज़ हुसैन कादिरी)**

रमज़ानुल्मुबारक

ऐ ईमान वालों तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये। (कुरआन) अहादीसे मुबारक में रमजान की बेशुमार फ़ज़ीलतें आयी हैं, निहायत खैर व बरकत वाला महीना है। इसमें किसी अमले मुस्तहब का सवाब दूसरे महीने के फ़र्ज़ के बराबर है और फ़र्ज़ का सवाब ७० के बराबर होता है। रोज़े की फ़ज़ीलत के लए यह काफी है कि हदीस शरीफ में है कि अल्लाह ने फरमाया! रोज़ा मेरे लिए है और इसकी जज़ा मैं दूँगा।

रोज़ह की नीयत ***नवैतु अन् असू मु ग़द्दन् लिल्लाहि तआला मिन् फ़र-द रमदा-न हा ज़ा०***

इफ़्तार की दुआ :

अल्ला हुम्म ल-क सुम्तु व बि-क आ मन्तु व अलै-क तवक्कल्तु व अला रिज़्क़ि-क अफ़ तरतु०

और इफ़्तार के बाद यह दुआ पढ़े :

ज़ ह बज़् ज़म्मा ओ वब तल्लतिल् ओरूकु व सबतल् अज्रू इन्शा अल्लाहु०

तरावीह का बयान

मसअला: मर्द व औरत सब के लिए तरावीह सुन्नते मुअक्किदह है इस का छोड़ना जाइज नहीं औरतें घरों में अकेले अकेले तरावीह पढ़ें। मस्जिदों में न जायें। घर में भी जमाअत से न पढ़ें कि औरतों की जमाअत मकरूहे तहरीमी व गुनाह है। (दुर्रे मुख़्तार जिल्द १ पृ० ४७२)

तरावीह बीस रकअतें दस सलाम से पढ़ी जायें यानी हर दो रकअत पर सलाम फेर दे और हर चार रकअत पर इतनी देर बैठना मुस्तहब है जितनी देर में चार रकअतें पढ़ी हैं और इख़्तियार है इतनी देर चाहे चुप बैठा रहे चाहे कलिमा या दुरूद शरीफ पढ़ता रहे या कोई भी दुआ पढ़ता रहे आम तौर पर यह दुआ पढ़ी जाती है।

तस्बीह तरावीह

सुब्हा न ज़िल् मुल्कि वल् म ल कूति सुब्हा न ज़िल इज़्ज़ति वल् अज़मति वल् हैबति वल् कुदरति वल् किबरियाए वल् ज बरुति सुब्हानल् मलिकिल् हय्यिल् लज़ी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बूहुन् कुद्दूसुन् रब्बुना व रब्बुल मलाए कति वर्रूहु० अल्लाहुम्म अजिर्ना मिनन्नारि या मुजीरू या मुजीरू या मुजीरू बि रह्मति-क या अर हमर्राहिमीन०

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ ط اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ط (درمختار ج۳)

नौ (९) मिनट में नौ (९) कुरान पाक और एक हज़ार (१०००) आयतों के बराबर सवाब

१.**सूरए फ़ातिहा (३) तीन बार पढ़ने का सवाब** दो बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मज़हरी)

२.आयतुल कुर्सी चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मवाहिबुर रहमान)

३.सूरए क़द्र चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन पढ़ने के बराबर है। (फिरदौस वैलमी)

४.सूरए ज़िल्ज़ाल दो (२) बार पढ़ने का सवाब एकबार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तिरमिज़ी शरीफ़)

५.सूरए आदियात दो (२) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मवाहिबुर्रहमान)

६.सूरए तकासुर एक (१) बार पढ़ने का सवाब एक हजार (१०००) आयतों के पढ़ने के बराबर है। (मिश्कात शरीफ़)

७.सूरए काफिरून चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तिरमिज़ी शरीफ़)

८. **सूरए नस्त्र चार (४) बार पढ़ने का सवाब** एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तिरमिज़ी शरीफ़)

९. सूरए अख्लास तीन (३) **बार पढ़ने का सवाब** एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (बुखारी शरीफ)

बस इतना अगर कोई पढ़ ले तो नौ (९) ***कुरआन शरीफ़ और एक हज़ार (१०००) आयतों*** के पढ़ने के बराबर सवाब पा सकता है।

इन सूरतों को पढ़कर आप अपने खानदान के मरहूमीन और तमाम मुसलमान मरहूमीन की रूह को इसाले सवाब कर सकते हैं।

तरीक़ए फ़ातिहा व न्याज़

मुसलमानों को दुनिया से जाने के बाद जो सवाब कुरआन मजीद का तन्हा या खाने वगैरह के साथ पहुँचाते हैं उर्फ मे इसे *फातिहा* कहते हैं कि इसमें सूरए फ़ातिहा पढ़ी जाती है। औलियाए किराम को जो इसाले सवाब करते हैं उसे ताअ्ज़ीमन नज़्र व न्याज़ कहते हैं। इसका तरीका यह है

वज़ू करके पहले तीन बार या ज्यादा *दुरूद शरीफ़* पढ़े फिर एक बार ***सूरए फातिहा*** पढ़े फिर एक बार ***आयतुल्कुरसी*** पढ़े फिर तीन बार या सात बार या ग्यारह बार ***सूरए अख्लास*** पढ़े फिर तीन बार या ज्यादा *दुरूद शरीफ़* पढ़े। इसके बाद दोनों हाथ उठा कर अर्ज़ करे कि ***इलाही***! मेरे इस पढ़ने (अगर खाना, कपड़ा वगैरह भी हों तो उनका नाम भी शामिल करे और इस पढ़ने और इन चीजों के देने पर) जो सवाब मुझे अता हो उसे मेरे अमल के लाएक न दे बल्कि अपने करम के लाएक़ अता फ़रमा और इसे मेरी तरफ से फुँला वलीयल्लाह मसलन् ***हुज़ूर पुरनूर सय्यिदिना गौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु***

की बारगाह में नज़्र पहुँचा और उनके आबाए किराम और मशाइख़े एज़ाम व औलाद अम्जाद, मुरीदीन व मुहिब्बीन और मेरे माँ बाप और **फुलाँ और फुलाँ** (जिसको सवाब पहुँचाना हो उसका नाम ले) और ***सय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम*** से रोजे क़यामत तक जितने मुसलमान हो गुज़रे या मौजूद हैं ***या कयामत तक होंगे सबको पहुँचा। आमीन या रब्बल आलमीन बि रहमति क या अरहमर राहिमीन०*** (अहकामे शरीअत)

मस्नून व मक़बूल दुआएँ

दुआ घर में दाखिल होते वक्त :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ خَيۡرَ الۡمَوۡلِجِ وَخَيۡرَ الۡمَخۡرَجِ

بِسۡمِ اللّٰهِ وَلَجۡنَا وَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلۡنَا (مشکوٰۃ شریف)

अल्लाहुम्म इन्नी अस अ लु क ख़ैरल मौलिजी व ख़ैरल मख़्रिजि बिस्मिल्लाहि व लज्ना व अलल्लाहि तवक्कल्ना (मिश्कात)

तर्जमा- ऐ अल्लाह मैं तुझ से सुवाल करता हूँ अच्छे दाखिल होने और बेहतर निकलने का अल्लाह के नाम से दाखिल हुए और हम ने अल्लाह पर भरोसा किया। (फिर घर वालों को सलाम करें।)

घर से बाहर निकलते वक्त :

بِسۡمِ اللّٰهِ تَوَكَّلۡتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ط

बिस्मिल्लाहि त वक्कलतु अलल्लाहि व ला हौ ल वला क़ु व्व त इल्ला बिल्लाह।

तर्जमा- मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया गुनाहों से बाज़ रहने और इबादत व नेकी करने की ताक़त अल्लाह ही की तरफ से है :

खाना शुरु करते वक्त : بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ ؕ

बिस्मिल्लाहि व अला बर क तिल्लाहि (मुस्तदरक)

तर्जमा- मैने अल्लाह के नाम से और अल्लाह की बरकत पर खाना शुरु किया।

खाने के बाद यह दुआ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَهَدَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत अ म ना व सक़ाना व हदाना व ज अ ल ना मिनल् मुस्लिमीन

तर्जमा- तमाम खूबियाँ उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया और हिदायत दी और मुसलमान बनाया।

सोते वक्त यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى ؕ

अल्लाहुम्म बि इस्मि क अमूतु व अहया (बुखारी)

तर्जमा- ऐ अल्लाह मैं तेरा नाम लेकर मरुँ और तेरा नाम लेकर ज़िन्दा रहुँ।

इसके बाद ३३ बार सुब्हानल्लाहि ३३ बार अलहम्दु लिल्लाहि और ३४ बार **अल्लाहु अकबर** फिर एक मरतबा **आयतुल कुर्सी** एक बार सूरह फ़ातिहा और एक बार **सूरह इख्लास** और एक बार सूरह काफिरुन इसके बाद तीन मरतबा पढ़े।

अस्तग़फिरुल्लाहुल लज़ी लाइला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैहि

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ ؕ

जब नींद से बेदार हो :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ؕ

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बा अ द मा अमा त ना व एलैहिन् नुशूर (बुखारी व मुस्लिम)

तर्जमा- सब खूबियाँ उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमको ज़िन्दा किया बाद मौत देने के और उसी की तरफ जाना है।

बैतुल ख़ला जाते वक्त :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

अल्लाहुम्म इन्नी अ ऊ ज़ु बि क मिनल खुब्सि वल खबाइसि

तर्जमा- ऐ अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ खबीस जिन्नों से मर्द हों या औरत। (बुखारी जिल्द २ सफ्हा १३६)

बैतुल खला से निकलते वक्त :

गुफ़्रा न क कहे इसके बाद यह दुआ पढ़े-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी अज़ ह ब अन्निल अज़ा व आफानी

तर्जमा- सब ताअ़रीफें अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझसे ईज़ा देने वाली चीज़ दूर की और मुझे आफ़ियत दी।

नया लिबास पहनते वक्त :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَيَاتِیْ ط

अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी कसानी मा ओवारी बिही औरती व अ त जम्मलु बिही फी हयाती

तर्जमा- सब ताअ़रीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझको कपड़ा पहनाया जिससे मैं अपनी शर्मगाह को छुपाता हूँ और अपनी जिन्दगी में इससे खूबसूरती हासिल करता हूँ :

सफर का इरादा हो तो यह पढ़े :

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَسِيْرُ ط (حصن حصین)

अल्लाहुम्म बि क असूलु व बि क अहूलु व बि क असीरु

तर्जमा- ऐ अल्लाह मैं तेरी ही मदद से दुश्मनो पर हमला करता हूँ और तेरी ही रहमत से उनके दफ़अ् करने की तदबीर करता हूँ और तेरे ही फज्ल से चलता हूँ (हस्नेहसी)

जब सवार होने लगे तो यह पढ़े :

किसी चीज़ पर सवार हो तो **बिस्मिल्लाह** कहे और जब बैठ जाए तो **अलहम्दु लिल्लाह** कहे फिर यह दुआ पढ़े-

سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ط

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुकरिनीन।

तर्जमा- अल्लाह पाक है जिसने इसको हमारे कब्ज़ा में कर दिया और हम उसकी कुदरत के बगैर इसको क़ब्ज़ा में करने वाले न थे।

जब कोई नेअमत मिले तो यह पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ ط

अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी बि नेअमतिही ततिम्मुस्सालिहात

तर्जमा- तमाम ताअ्रीफें उस अल्लाह के लए हैं जिसकी नेअ्मत से अच्छी चीजे मुकम्मल होती हैं।

आईना देखकर यह पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَللّٰهُمَّ كَمَا اَحْسَنْتَ خَلْقِىْ فَحَسِّنْ خُلُقِىْ ط

अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहुम्-म कमा हस्सन्त ख़ल्क़ि फ़हस्सिन् खुल्क़ी॰

तर्जमा- ऐ अल्लाह जिस तरह तू ने मेरी ज़ाहिरी सूरत अच्छी बनायी उसी तरह मेरी आदत व सीरत भी अच्छी बना दे।

आँखों में सुर्मा लगाते वक़्त :

اَللّٰھُمَّ مَتِّعْنِیْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ

अल्लाहुम्म मत्ति अ्नी बिस्समए वल ब स रि

तर्जमा- ऐ अल्लाह मुझे फायदा दे कान और आँख से

मुसीबत के वक्त यह पढ़े :

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ ط

इन्ना लिल्लहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

तर्जमा- हम अल्लाह के हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

मुसाफा के वक्त यह कहे : یَغْفِرُاللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ ط

यग़फिरुल्लाहु लना व लकुम

तर्जमा- अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़फिरत करे

खाली घर में दाखिल होते वक्त :

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ

अस्सलातु वस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह

तर्जमा- ऐ अल्लाह के रसूल आप पर दुरूद व सलाम हो।

दुरूदे ख़ास

सल्लल्लाहु अलै-क या मुहम्मदु

नूरम-मिन् नूरिल्लाहि

कोई रंज या मुसीबत आ जाए तो सिद्क़ दिल से इस दुरूद पाक को पढ़ने से हर क़िस्म की मुसीबतें, तकलीफ़ें और रंज व ग़म ख़त्म हो जाते है।

दुरूदे जुम्आ

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

सल्लल्लाहु अलन नबीइल उम्मीये व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातवँ व सलामन अलैक या रसूलल्लाह

जो शख्स **हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलेह वसल्लम** से सच्ची मुहब्बत रक्खे, तमाम जहान से ज्यादा **हुजूर** की अजमत दिल में जमाए **हुजूर** की शान घटाने वालों वद मजहवों से वेजार और उन से दूर रहे वह अगर इस **दुरुदे मक्बूल** को हर रोज या वरोजे जुम्आ बाद नमाजे फज्र या वाद नमाजे जुम्आ **मदीना तय्यिबा** की जानिव यानी **किब्ला से दाहिने हाथ तिर्छे** दस्त वस्ता खड़े होकर पढ़े वेशुमार सवाव पाए इस **दुरुद** को एक वार पढ़ने से **१०० दुरुद** का सवाव मिलता है तो जिसने १०० बार पढ़ा गोया दस हजार मरतवा **दुरुद** पढ़ने का सवाव पाया वेहतर है कि वाद नमाजे जुम्आ दो चार दस वीस आदमी मिलकर पढ़ें।

फजाइल व फ़वाइद : इसके **४० फायदे** हैं जो मुअत्तवर हदीसों से साबित हैं यहाँ चन्द जिक्र किये जाते हैं : (१) **इस दुरुद शरीफ के पढ़ने वाले पर खुदाए तआला तीन हजार रहमतें नाजिल फरमाएगा (२) उस पर दो हजार बार अपना सलाम भेजेगा (३) पाँच हजार नेकियाँ उसके नामए आमाल में लिखेगा (४) पांच हजार गुनाह**

मुआफ फरमाएगा (५) उसके माथे पर लिख देगा कि यह दोजख से आजाद है (६) अल्लाह उसे क्यामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा (७) उसके माल मे तरक्की और बरकत देगा (८) उसकी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत देगा (९) दुश्मनो पर गल्बा देगा (१०) दिलों में उसकी मुहब्बत रखेगा (११) किसी दिन खाब में बरकते जियारते अक्दस से मुशर्रफ होगा (१२) ईमान पर खातिमा होगा (१३) क्यामत मे हुजूर की शफाअत नसीब होगी (१४) अल्लाह तआला उससे ऐसा राजी होगा कि कभी नाराज न होगा।

इस्मे आज़म

अल्ला हुम्-म इन्नी अस्अलु-क बि अन्न-क अन्तल्लाहु ला इला-ह इल्ला अन्तल् अहदुस्समदुल्लज़ी लम य लिद व लम् यूलद व लम् य कुल्लहू कुफुवन अहद०

अल्ला हुम्-म इन्नी अस्अलु-क बि अन्-न लकल् हम्दु ला इला-ह अन्तल् हन्नानुल् मन्नानु बदी ऊस्समावाति वल्अर्दि या ज़ल जलालि वलइक्रामि या हय्यु या क़य्यूमु अस्अलु-क व इलाहुकुम् इला हुव् वाहिद० ला इला-ह हुवर्रह्मानुर्रहीम ० अलिफ़ लाम मीम ० अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल क़य्यूमु ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन ०

अस्नाद दुआ-ए-गन्जुल अर्श

रिवायत है कि एक दफ़ा हज़रत रसूले खुदा *सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम्* मसजिद में तशरीफ़ रखते थे कि नागाह *जिब्राईल अलैहिस्सलाम* आये और फज़ाइल इसके बयान किये। इस तूल व तवील अस्नाद को हज्फ करके कम करके पढ़ने वालों के हुस्ने एतक़ाद व रुसखे अक़ीदत पर छोड़ दिया जाता है और तबर्रुकन इसका लब्बे लुबाबे असल नतीजा लिखा जाता है कि जिब्राईल ने मिन्जुम्ला इन फजाइल के यह भी फर्माया कि क़ारी को इस दुआ के ज़रिये से हक तआला तीन चीजें, इनायत फरमाएगा अव्वल उसकी रोजी में बरकत देगा दूसरे उस को गैब से रोजी मरहमत् फरमाएगा तीसरे उसके दुश्मन आजिज़ रहेंगे। और जो कोई इस दुआ को पढ़ा करेगा या अपने पास रखेगा तो अल्लाह की रहमत उस पर नाजिल होगी और मैदाने जंग में गालिब रहेगा और सफर से सही सलामत मअ़ गनीमत घर आवेगा और यह बरकत इस दुआ के जादू और शैतानों के शर से और सभी बलाओं से जमीनी, आसमानी से महफूज रहेगा इसको धोकर अव्वल बारिश के पानी से मसहूर, जादू वाले मरीज को पिलाये तो शिफा होगी और इस ताअ़वीज को धोकर ऐसे शख्स को हर रोज पिलाया जाये कि जिसकी बीमारी ने इलाज करने वाले को हैरान कर रखा हो तो खुदा के फज्लोकरम से जल्द शिफा हो और बे औलाद वाले को इसका तावीज मुश्क व जाफरान से लिख कर २१ इक्कीस रोज पिलाया जाये तो साहिबे औलाद हो और इसकी बरकत से उम्मीद है क़यामत के रोज ऐसा दरजा बुलन्द पायेगा कि और लोग इस दर्जा की तमन्ना करेंगे और इसका पढ़ने वाला कभी रास्ता न भूलेगा। अलगरज इस दुआ-ए बुजुर्गवार की कोई क्या खूबी और तारीफ बयान कर सकता है अगर सात आसमान और सात जमीन के कागज बनाये जाए और जमीन के पेड़ों के कलम हों और कुल मख्लूकात पैदा की हुयी आसमान व जमीन अजल से अबद तक इसकी तारीफ लिखते रहे तो भी एक हर्फ की तारीफ पूरी न हो, न कि कुल की। इसमें रैब व शक को दखल नहीं।

दुआए गंजुल अर्श دعائے گنج العرش

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मलिकिल कुद्दूसि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الملک القدوس
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अज़ीज़िल जब्बारि	لا الٰہ الا اللہ سبحان العزیز الجبار
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रऊफिर रहीमि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الرؤف الرحیم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ग़फूरिल रहीमि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الغفور الرحیم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल करीमिल हकीमि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الکریم الحکیم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क़वीयिल वफ्फीये	لا الٰہ الا اللہ سبحان القوی الوفی
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल लतीफिल ख़बिरि	لا الٰہ الا اللہ سبحان اللطیف الخبیر
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस स मदिल मअबूदि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الصمد المعبود
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ग़फूरिल वदूदि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الغفور الودود
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल वकीलील कफीली	لا الٰہ الا اللہ سبحان الوکیل الکفیل
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रक़ीबिल हफीज़ि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الرقیب الحفیظ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानद्दाए मिल क़ाइमि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الدائم القائم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मुहय्यिल मुमीती	لا الٰہ الا اللہ سبحان المحی الممیت
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हय्यिल कय्यूमि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الحی القیوم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालि कि बारिए	لا الٰہ الا اللہ سبحان الخالق البارئ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अलीइल अज़ीमि	لا الٰہ الا اللہ سبحان العلی العظیم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानलत वाहिदिल अ ह दि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الواحد الاحد
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मुअमिनिल मुहयमिनि	لا الٰہ الا اللہ سبحان المؤمن المھیمن
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हसीबिश शहीदि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الحسیب الشھید
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हलीमिल करीमि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الحلیم الکریم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अव्वलिल क़दीमि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الاول القدیم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अव्वलिल आखिरि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الاول الآخر
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानज़ ज़ाहिरिल बातिनि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الظاھر الباطن
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल कबीरिल मु त आलि	لا الٰہ الا اللہ سبحان الکبیر المتعال

ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क़ाज़िइल हाजाति	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْقَاضِي الْحَاجَاتِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रहमानिर रहीमि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बिल अर्शिल अज़ीमि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बियल अअला	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल बुरहानिस सुलतानि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْبُرْهَانِ السُّلْطَانِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस समीइल बसीरि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल वाहिदिल क़ह्हारि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अलीमिल हकीमि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَلِيْمِ الْحَكِيْمِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस सत्तारिल ग़फ्फारि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ السَّتَّارِ الْغَفَّارِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रहमानिद दय्यानि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الرَّحْمٰنِ الدَّيَّانِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल कबीरिल अकबरि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْكَبِيْرِ الْاَكْبَرِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अलीमिल अल्लामि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَلِيْمِ الْعَلَّامِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानश शाफिल काफी	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الشَّافِي الْكَافِي
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अज़ीमिल बाक़ी	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَظِيْمِ الْبَاقِي
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस स म दिल अ ह दि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الصَّمَدِ الْاَحَدِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बिल अर्दि वस्समावाति	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ رَبِّ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालिकिल मख्लूक़ाति	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْخَالِقِ الْمَخْلُوْقَاتِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न मन ख़ ल क़ल्ले ल वन्नहार	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालिकीर रज़्ज़ाकी	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْخَالِقِ الرَّزَّاقِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल फत्ताहील अलीमी	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْفَتَّاحِ الْعَلِيْمِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अज़ीज़ील गनिय्यी	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَزِيْزِ الْغَنِيِّ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल गफुरिश्शकुरी	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغَفُوْرِ الشَّكُوْرِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अज़ीमिल अलीमी	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَظِيْمِ الْعَلِيْمِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हाना ज़ील मुल्की वल्मला कुती	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِي الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल इज़्ज़ति वल अज़मति	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल हय्बति वल कुदरति	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِي الْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल किब्रियाए वल ज बरुति	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِي الْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस सत्तारिल अज़ीमि	لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ السَّتَّارِ الْعَظِيْمِ

ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल आलिमिल ग़ैबि	لا إله إلا الله سبحان العالم الغيب
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हमीदिल मजीदि	لا إله إلا الله سبحان الحميد المجيد
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हकीमिल क़दीमि	لا إله إلا الله سبحان الحكيم القديم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क़ादिरिस सत्तारि	لا إله إلا الله سبحان القادر الستار
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस समीइल अलीमि	لا إله إلا الله سبحان السميع العليم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ग़नीइल अज़ीमि	لا إله إلا الله سبحان الغني العظيم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अल्लामीस्सलामी	لا إله إلا الله سبحان العلام السلام
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मलिकिन नसीरि	لا إله إلا الله سبحان الملك النصير
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ग़नीइर रहमानि	لا إله إلا الله سبحان الغني الرحمن
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न क़रीबिल ह स नाति	لا إله إلا الله سبحان القريب الحسنات
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न वलीइल ह स नाति	لا إله إلا الله سبحان أولي الحسنات
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस सबूरिस सत्तारि	لا إله إلا الله سبحان الصبور الستار
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालिकिन नूरि	لا إله إلا الله سبحان الخالق النور
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ग़नीइल मुअजिज़ि	لا إله إلا الله سبحان الغني المعجز
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल फादिलिश शकूरि	لا إله إلا الله سبحان الفاضل الشكور
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ग़नीइल क़दीमि	لا إله إلا الله سبحان الغني القديم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल जलालिल मुबीनि	لا إله إلا الله سبحان ذي الجلال المبين
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालिसिल मुख्लिसि	لا إله إلا الله سبحان الخالص المخلص
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न सादिकिल वाअदि	لا إله إلا الله سبحان صادق الوعد
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हक्क़िल मुबीनि	لا إله إلا الله سبحان الحق المبين
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल कूव्वतिल मतीनि	لا إله إلا الله سبحان ذي القوة المتين
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क़वीइल अज़ीज़ि	لا إله إلا الله سبحان القوي العزيز
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न अल्लामिल गुयूबि	لا إله إلا الله سبحان علام الغيوب
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हय्यिल लज़ी ला यमूतु	لا إله إلا الله سبحان الحي الذي لا يموت
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न सत्तारिल ओयूबि	لا إله إلا الله سبحان ستار العيوب
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल गुफरानिल मुस्तआनि	لا إله إلا الله سبحان الغفران المستعان
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बिल आलमीन	لا إله إلا الله سبحان رب العالمين
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रहमानिस सत्तारि	لا إله إلا الله سبحان الرحمن الستار

ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रहीमिल ग़फ्फारि	لا اله الا الله سبحان الرحيم الغفار
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अज़ीज़िल वह्हाबि	لا اله الا الله سبحان العزيز الوهاب
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क़ादिरिल मुक़्तदिरि	لا اله الا الله سبحان القادر المقتدر
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल गुफ़्रानिल हलीमि	لا اله الا الله سبحان ذي الغفران الحليم
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न मालिकिल मुल्कि	لا اله الا الله سبحان مالك الملك
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल बारिइल मुसव्विरि	لا اله الا الله سبحان البارئ المصور
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अजीज़िल जब्बारि	لا اله الا الله سبحان العزيز الجبار
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल जब्बारिल मु त कब्बिरि	لا اله الا الله سبحان الجبار المتكبر
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल्लाहि अम्मा यसिफ़ून	لا اله الا الله سبحان الله عما يصفون
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल कुद्दूसिस सुब्बूहि	لا اله الا الله سبحان القدوس السبوح
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बिल मलाए कति वर्रूहि	لا اله الا الله سبحان رب الملائكة والروح
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल आलाए वन्नअमाए	لا اله الا الله سبحان ذي الآلاء والنعماء
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मलिकिल मक़्सूदि	لا اله الا الله سبحان الملك المقصود
ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हन्नानिल मन्नानि	لا اله الا الله سبحان الحنان المنان
ला इला ह इल्लल्लाहु आदमु सफीयुल्लाहि	لا اله الا الله آدم صفي الله
लाइला ह इल्लल्लाहु नुहुन नजीयुल्लाहि	لا اله الا الله نوح نجي الله
लाइला ह इल्लल्लाहु इब्राही मु खलीलुल्लाहि	لا اله الا الله ابراهيم خليل الله
लाइला ह इल्लल्लाहु इस्माइलु ज़बीहुल्लाहि	لا اله الا الله اسمعيل ذبيح الله
लाइला ह इल्लल्लाहु मूसा कलीमुल्लाहि	لا اله الا الله موسى كليم الله
लाइला ह इल्लल्लाहु दाऊदु खलीफतुल्लाहि	لا اله الا الله داود خليفة الله
लाइला ह इल्लल्लाहु ईसा रुहुल्लाहि	لا اله الا الله عيسى روح الله
लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाहि	لا اله الا الله محمد رسول الله
लाइला ह इल्लल्लाहु खैरि खल्केही व नूरे अर्शेहि	لا اله الا الله خير خلقه ونور عرشه
अफज़लिल अम्बियाए वल मुरसली न	افضل الانبياء والمرسلين
हबीबिना व सय्येदिना व स न दिना व	حبيبنا وسيدنا وسندنا و
शफि ऐना व मौलाना मुहम्मदिवँ व अला	شفيعنا ومولينا محمد وعلى
आलिही व असहा बिही अजमईन बिरहमति	اله واصحابه اجمعين برحمتك
क या अरहमर्राहिमीन	يا ارحم الراحمين

मुनाजात दरगाह कादरियत - हज़रत

रोज़ाना सुब्ह व शाम या हर नमाज़ के बाद इसको पढ़ लिया करें, बेहतर है।

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशाका साथहो
या इलाही भूल जाऊँ नज़अ़ की तकलीफ को
शादिये दीदार हुस्ने मुस्तफा का साथ हो
या इलाही गोरे तीरह की जब आए सख्त रात
उनके प्यारे मुँह की सुब्हे जाँफिज़ा का साथ हो
या इलाही जब पड़े महशरमें शोरे दारो गीर
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो
या इलाही जब ज़बानें बाहर आएँ प्यास से
साहिबे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो
या इलाही सर्द मोहरी परहो जब खुरशीदे हश्र
सय्यदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो
या इलाही गरमिये महशर से जब भड़कें बदन
दामने मूहबब की ठंडी हवा का साथ हो
या इलाही नामए आ़माल जब खुलने लगें
ऐ़ब पोशे खल्क़ सत्तारे ख़ता का साथ हो
या इलाही जब बहें आँखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होंटोंकी दुआ़का साथहो
या इलाही जब हिसाबे खंदए बेजा रुलाय
चश्मे गिरयाने शफीए मुरतजा का साथहो
या इलाही रंग लाएँ जब मेरी बे बाकियाँ
उनकी नीची नीची नज़रोंकी हयाका साथहो
या इलाही जब चलूँ तारीक राहे पुलसिरात
आफ्ताबे हाश्मी नूरुल हुदा का साथ हो
या इलाही जब सरे शम्शीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा का साथहो
या इलाही जो दुआ़एँ नेक हम तुझ से करें
कुदसियों के लबसे आमीं रब्बना का साथ हो
या इलाही जब रज़ा खाबे गिराँसे सर उठाय
दौलते बेदार इशके मुस्तफा का साथ हो

तादादे रकअत तरतीब के साथ

फ़ज्र	ज़ुहर	अस्र	मग़रिब
सुन्नते मुअक्किदः 2	सुन्नते गैर मुअक्किदः 4	सुन्नते मुअक्किदः 4	
फर्ज़ 2	फर्ज़ 4	फर्ज़ 4	फर्ज़ 3
	सुन्नते मुअक्किदः 2		सुन्नते मुअक्किदः 2
	नफ्ल 2		नफ्ल 2
मजमूई तादाद 4	12	8	7

इशा	जुम्आ	ईदैन	दीगर नमाजें
सुन्नते गैर मुअक्किदः 4	सुन्नते मुअक्किदः 4	वाजिब 2	तरावीह सुन्नते मुअक्किदः 20
फर्ज़ 4	फर्ज़ 2		तहज्जुद 8
सुन्नते मुअक्किदः 2	सुन्नते मुअक्किदः 4		इश्राक़ 2
नफ्ल 2	सुन्नते गैर मुअक्किदः 2		चाश्त 12
वाजिब वित्र 3	नफ्ल 2		अव्वाबीन 6
नफ्ल 2			सलातुत्तस्बीह 4
मजमूई तादाद 17	14	2	